



आसनसोल रेल मंडल / राजभाषा विभाग की ई-पत्रिका

रेल रश्मि

अंक : 34

दिसंबर, 2024

राजभाषा विषयक महत्वपूर्ण गतिविधियाँ (जुलाई, 2024 से अबतक)



‘राजभाषा पखवाड़ा -2024’ के अंतर्गत दामोदर सभाकक्ष में विभिन्न विभागों द्वारा हिंदी में निपटाए गए कार्यों को दर्शाती राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते मंडल रेल प्रबंधक, श्री चेतनानंद सिंह। प्रस्तुत कि



‘राजभाषा पखवाड़ा-2024’ का विधिवत् उद्घाटन करते अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी-सह-अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री आशीष भारद्वाज। इस अवसर पर रेलकर्मियों के बच्चों द्वारा काव्य-पाठ किया गया।



विवेकानंद इंस्टीट्यूट में 04.07.2024 को दो नाटक “वृद्धाश्रम” और “एक पत्र” मंचित किए गए। मंचन के उपरांत कलाकारों को पुरस्कृत करते व.मं.यां.इंजी.(डी)/अंडाल, श्री सचेंद्र गोस्वामी।



विवेकानंद इंस्टीट्यूट में 04.07.2024 को मंचित डीजल शेड के कार्यालय अधीक्षक श्री अंजन राय द्वारा निर्देशित नाटक ‘एक पत्र’ का एक मार्मिक दृश्य।



‘हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिता’ में भाग लेनेवाले दुर्गापुर स्टेशन क्षेत्र में कार्यरत कर्मिकों के बच्चों को 01.07.2024 को पुरस्कृत करते राजभाषा अधिकारी,



सिउड़ी स्टेशन क्षेत्र में संपन्न ‘हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिता’ के प्रतिभागी पुरस्कृत बच्चों का एक दृश्य। साथ में राजभाषा अधिकारी एवं स्टेशन प्रबंधक/सिउड़ी। (03.07.2024)

रेल रश्मि

जुलाई, 2024

34वाँ अंक



संरक्षक
चेतनानंद सिंह
मंडल रेल प्रबंधक



उप संरक्षक
प्रवीण कुमार प्रेम
अपर मंडल रेल प्रबंधक



प्रधान संपादक
राहुल राज
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं वरि.मंडल सुरक्षा आयुक्त



संपादक
डॉ.मधुसूदन दत्त
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता
वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग

सहयोग
दिलीप कुमार पासवान / वरि.अनुवादक
संजय राउत / कनि.अनुवादक
अनिल कु.वर्मा / कनि.अनुवादक
विजय राजभर/ कनि.अनुवादक

मो. 900202625 (राजभाषा अधिकारी)
ई.मेल : rajbhashaerasn@gmail.com

विषय सूची

पृ.

रचना

अ.क्र.

3
4
5
6
5- 13
13-14
14-16
16
17
17-18
18
18
18-19
20-21
21-22
23-24
23-25
26-27
27
28
29-30

मंडल रेल प्रबंधक की कलम से
अपर मंडल रेल प्रबंधक की कलम से
उप मुराधि की कलम से
संपादकीय
राजभाषा विषयक गतिविधियाँ
राजभाषा का महाकुंभ (आलेख)
रिपोर्टाज (आलेख)
दो कविताएँ
बुढ़ापा (कविता)
धरती माँ (आलेख)
सीखने की ललक (कविता)
एकता गीत (कविता)
नालायक (कहानी)
खुशियों के इंद्रधनुष (कहानी)
गण का तंत्र : लोकतंत्र (आलेख)
कार्यालयी कार्यों में हिंदी (आलेख)
दक्षिण भारत का ..(आलेख)
आध्यात्मिक परिवर्तन (आलेख)
कार्मिक विभाग की गाथा
स्वच्छता (कविता)
ऐ दुनिया, आज मेरी बिटिया....

चेतनानंद सिंह
प्रवीण कुमार प्रेम
राहुल राज
डॉ. मधुसूदन दत्त
दिलीप कु. पासवान
डॉ. मधुसूदन दत्त
पुरुषोत्तम कु.गुप्ता
शंकर कु. मिश्रा
राजीव कु. तिवारी
उपेंद्र प्रसाद
शशि कु. साह
अनिल कु. वर्मा
विनय कुमार
तापस कु. भट्टाचार्यजी
संजय राउत
केशव कुमार
सिद्धार्थ गुप्ता
राम स्वारथ सिंह
रवींद्र कुमार 'रवि'
अखिलेश कुमार
विजय राजभर

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

आग्रह : 'रेल रश्मि' के 35वें अंक के लिए अपनी स्वरचित एवं अप्रकाशित रचनाएँ राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराएँ ताकि इसके कलेवर में श्रीवृद्धि हो सके।
- संपादक



संरक्षक की कलम से



प्रिय पाठको!

गृह पत्रिकाएँ मंडल की सकारात्मक और रचनात्मक गतिविधियों का प्रतिबिंब होती हैं। आसनसोल मंडल की गृह पत्रिका 'रेल रश्मि' के 34वें अंक का यदि आप अवलोकन करेंगे, तो महसूस होगा कि आसनसोल रेल मंडल की सृजनात्मक प्रतिभाओं को एक रचनात्मक मंच मिला है।

आसनसोल मंडल ने अनेक क्षेत्रों में विकास की नयी ऊँचाइयों को छुआ है। इस हेतु आसनसोल रेल मंडल के अनेक अधिकारियों एवं कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया है। भारतीय रेल परिवार में दुलाई के मामले में हमारा मंडल 7वें स्थान पर है। यह आसनसोल रेल मंडल के लिए गौरव का विषय है।

राजभाषा विभाग द्वारा मंडल के हिंदी भाषी क्षेत्र के स्टेशनों के अलावे सिउड़ी, पानागढ़, दुर्गापुर जैसे हिंदीतर भाषी स्टेशनों के कार्मिकों और उनके बच्चों के लिए भी अनेक सुरुचिपूर्ण और प्रेरक कार्यक्रम आयोजित कराए गए। पत्रिका के इस अंक में मंडल के अनेक सृजनशील अधिकारियों/कार्मिकों की रचनाएँ प्रकाशित हैं।

'रेल रश्मि' आपकी अपनी पत्रिका है। अनुरोध है कि आप अवश्य ही अगले 35वें अंक में प्रकाशन हेतु अपनी स्तरीय रचनाएँ उपलब्ध कराएँ।

नववर्ष की मंगलकामनाओं के साथ।

चेतना नंद
(चेतना नंद सिंह)
मंडल रेल प्रबंधक



अपर मंडल रेल प्रबंधक की कलम से



सहृदय सुधीजनो!

इस रचनात्मक मंच से पहली बार संबोधित करने का मुझे सौभाग्य मिला है। आसनसोल मंडल की राजभाषा पत्रिका 'रेल रश्मि' के नवीनतम 34वें अंक को ई.पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

हाल-फिलहाल में आसनसोल मंडल की अनेक स्वर्णिम उपलब्धियों का आप लोग साक्षी रहे होंगे। आसनसोल मंडल के चहुँमुखी विकास-यात्रा के आप सभी लोग सहयात्री हैं। आप सभी की मिली-जुली कर्मठता का प्रतिफल है कि पूर्व रेलवे में अन्य मंडलों की अपेक्षा आसनसोल मंडल हमेशा अग्रेसर रहा है।

मंडल की यह पत्रिका अधिकारियों और कर्मचारियों के सकारात्मक सृजनशीलता को एक सशक्त मंच प्रदान करता है। राजभाषा विभाग ने मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों और उनके बच्चों के बीच हिंदी के प्रति अलख जगाने का काम किया है। ज्ञात हुआ है कि आसनसोल नगर क्षेत्र में अवस्थित केंद्र सरकार के 49 प्रतिष्ठानों के बीच की कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद आसनसोल रेल मंडल को 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' के तत्वावधान में लगातार पाँचवी बार 'राजभाषा शील्ड का द्वितीय पुरस्कार' जून, 2024 को हासिल हुआ है।

राजभाषा विषयक विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रमों में आप लोग अपने सहकर्मियों साथियों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया करें। इसके दो फायदे होंगे : एक तो आपको अपने कार्य-क्षेत्र की एकरसता से कुछ राहत मिलेगी और नयी ऊर्जा मिलेगी। दूसरी ओर राजभाषा के प्रचार-प्रसार के अभियान में आप भी सक्रिय भूमिका निभा पाएंगे।

आप सभी से यह विशेष अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंक हेतु अपनी रचनाएँ राजभाषा विभाग का उपलब्ध कराएँ ताकि पत्रिका की श्रीवृद्धि हो।

नए साल की शुभकामनाओं के साथ।

(प्रवीण कुमार प्रेम)
अपर मंडल रेल प्रबंधक



उप मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से



प्रिय पाठको !

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में आप सभी को संबोधित करने का यह मेरा पहला अवसर है। इसी अवसर पर राजभाषा पत्रिका 'रेल रश्मि' के 34वें अंक को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राजभाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित होनेवाले प्रोत्साहनमूलक अधिकांश कार्यक्रमों में मैंने भाग लिया है। मुझे महसूस हुआ कि राजभाषा विषयक इन कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य यही रहा है कि मंडल के विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को एक रचनात्मक मंच पर लाया जाए और राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु उपयुक्त माहौल बनाया जाए। मुझे बड़ी खुशी हुई कि इन कार्यक्रमों का आयोजन मंडल कार्यालय के अतिरिक्त अन्य स्टेशनों पर भी हुआ। सिउड़ी, दुर्गापुर, अंडाल, बराकर, पानागढ़ जैसे गैर-हिंदीभाषी क्षेत्र में कार्यरत कर्मिकों के अतिरिक्त जसीडीह, मधुपुर, सिमुलतला आदि स्टेशनों के कर्मिकों को भी राजभाषा के प्रेरक कार्यक्रमों से जुड़ने का मौका मिला। यह जानकर और भी खुशी हुई कि राजभाषा की प्रतियोगिताओं में सफल आसनसोल मंडल के कर्मिकों को प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित होनेवाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने और पुरस्कृत होने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

'राजभाषा पखवाड़ा-2024' के अंतर्गत आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं कवि-सम्मेलन में अधिकारियों एवं कर्मिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और राजभाषा विभाग ने उन्हें यथायोग्य सम्मानित किया।

आशा है कि राजभाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित होनेवाले भावी कार्यक्रमों में आप लोगों की सहभागिता इसी प्रकार बनी रहेगी ताकि राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की दिशा में आप लोग भी सक्रिय भूमिका निभा सकें।

विशेष अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी 35वें अंक के लिए अपनी रचनाएँ यथाशीघ्र राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराएँ ताकि पत्रिका के कलेवर में श्रीवृद्धि हो सके।

नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ।

राहुल राज
12/1/24

(राहुल राज)

वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त



संपादकीय



आदरणीय पाठकवृंद !

‘रेल रश्मि’ आसनसोल मंडल के राजभाषा विभाग की एक महत्वपूर्ण रचनात्मक उपलब्धि रही है। इसी की सकारात्मक कड़ी के रूप में इसका 34वाँ अंक आपलोगों के समक्ष प्रस्तुत है। आसनसोल पूर्व रेलवे को सर्वाधिक अर्जनशक्ति प्रदान करनेवाला मंडल रहा है। इसके क्षेत्राधिकार में दुर्गापुर, रानीगंज, आसनसोल आदि जैसे खनिज-संपदा से भरपूर औद्योगिक नगर पड़ते हैं। इसके अंतर्गत गिरिडीह, सिमुलतला, मधपुर, दुमका (मसानजोर) जैसे प्राकृतिक क्षेत्र के साथ-साथ देवघर (बैद्यनाथधाम, सत्संग आश्रम, रिखिया योगपीठ), चिनपाई (वक्रेश्वरधाम), बासुकीनाथ, शंकरपुर (बुढ़ई माता) आदि जैसे धार्मिक स्थल भी शामिल हैं। इन क्षेत्रों में देश के कोने-कोने से भारी संख्या में पर्यटक और तीर्थयात्री पूरे वर्ष भर आते रहते हैं। इन सबके कारण पूर्व रेलवे ही नहीं, अपितु भारतीय रेल में आसनसोल मंडल का विशिष्ट स्थान रहा है। रेलवे के इसी विविधरंगी परिप्रेक्ष्य में राजभाषा विभाग की यह पत्रिका भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की दिशा में मंडल की गृह पत्रिका ‘रेल रश्मि’ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मंडल के सृजनशील अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा के मंच से सीधे तौर पर यह पत्रिका जोड़ कर रखती है। मंडल रेल प्रबंधक महोदय के नेतृत्व में मंडल के विभिन्न स्टेशनों व शेडों में विविध प्रकार के विकासोन्मुख कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। इसी क्रम में अलग-अलग विभागों में भी शाखा अधिकारियों के मार्गदर्शन में बहुपयोगी समारोह एवं सेमिनार आयोजित होते रहते हैं। उक्त संबंधी विभागीय उपलब्धियों को प्रत्येक माह आसनसोल मंडल के वेब साइट पर प्रकाशित होनेवाली मंडल की मासिक पत्रिका ‘रेल संवाद’ में यथोचित स्थान दिया जाता है। राजभाषा विभाग के तत्वावधान में भी विविध स्तरीय आयोजन होते रहे हैं। इन सभी को ‘रेल रश्मि’ के प्रस्तुत अंक में समेटने का प्रयास किया गया है तथा मंडल के सृजनशील अधिकारियों एवं कर्मिकों की रचनाओं को भी मंच प्रदान किया गया है।

‘रेल रश्मि’ के आगामी अंक के कलेवर में श्रीवृद्धि हेतु आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी। इसके अतिरिक्त शाखा अधिकारीगण से विशेष अनुरोध है कि अपने विभाग के अधीन आयोजित होने विशिष्ट गतिविधियों के फोटोग्राफ और संबंधित विवरण राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाए ताकि आगामी अंक में उन्हें पर्याप्त स्थान दिया जा सके।

नववर्ष 2025 की कुसुमित शुभकामनाओं के साथ

(डॉ. मधुसूदन दत्त)
राजभाषा अधिकारी



स्वागत : हमारे नये उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

राहुल राज
वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त



श्री राहुल राज वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त के महत्वपूर्ण दायित्व को निभा रहे हैं। अपने विभागीय कार्यों के अतिरिक्त आसनसोल मंडल के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी का दायित्व आपने 24 अक्टूबर, 2024 से संभाल लिया है। राजभाषा विषयक गतिविधियों में आपकी सराहनीय भागीदारी रही है।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की दिशा में आसनसोल मंडल उत्तरोत्तर अग्रसर रहेगा।

राजभाषा विषयक प्रमुख गतिविधियाँ

* नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में 'मंडल रेल कार्यालय/आसनसोल' को लगातार छठी बार राजभाषा चल वैजयंती शील्ड (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया (27 नवंबर, 2024) : केंद्र सरकार के लगभग 49 कार्यालयों को मिलाकर गठित 'बर्नपुर-आसनसोल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' राजभाषा के प्रयोग-प्रसार हेतु एक महत्वपूर्ण निगरानी समिति है। इसका अध्यक्षीय कार्यालय सेल/ईस्को बर्नपुर है। प्रत्येक छमाही में होनेवाली समिति की बैठक में समिति-सदस्य द्वारा उनके कार्यालयों में राजभाषा विषयक विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की समीक्षा की जाती है और मूल्यांकन-मानकों के आधार पर विगत छह छमाही से मंडल रेल कार्यालय को लगातार राजभाषा चल वैजयंती के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।



अध्यक्ष/नराकास-सह-प्रबंध निदेशक/ ईस्को, श्री एस.पी. सिंह के कर-कमलों से राजभाषा शील्ड व प्रमाण-पत्र ग्रहण करते उप मुराधि-सह-व.मंडल सुरक्षा आयुक्त, श्री राहुल राज। साथ में हिंदी प्रशिक्षक, श्री दीपक साव व कनिष्ठ अनुवादक श्री विजय राजभर।



सिमुलतला स्टेशन हेतु 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का गठन : 16 अप्रैल, 2024 को सिमुलतला स्टेशन क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु अलख जगाने के उद्देश्य से 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का गठन किया गया। इसकी पहली बैठक 16 अप्रैल, 2024 को स्टेशन प्रबंधक श्री अखिलेश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गयी।





* मंडल में 13.06.2024 के प्रथम पाली में हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें विभिन्न विभागों/स्टेशनों के 21 कर्मिकों ने बतौर प्रतिभागी भाग लिया। श्री मनीष रंजन/यातायात निरीक्षक/सीतारामपुर सेक्शन, श्री अशोक आशीष/कार्यालय अधीक्षक/कार्मिक विभाग एवं श्री दिनेश कुमार/तकनीशियन/डीजल शेड क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे।



* मंडल में 13.06.2024 के द्वितीय पाली में हिंदी वाक प्रतियोगिता आयोजित हुई। विभिन्न विभागों/स्टेशनों से इसमें 11 कर्मिकों ने बतौर प्रतिभागी भाग लिया। मल्यांकन समिति में वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री राहुल राज और मंडल सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर श्री वर्मा परिलक्षित हो रहे हैं। सुश्री शशिवाला रानी/लोको पाइ., श्री अखिलेश कुमार/स्टे.प्र./सिमुलतला और श्री विनय कुमार/पावर कंट्रोलर क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे।



* मंडल में 14.06.2024 को हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई। विभिन्न विभागों/स्टेशनों से इसमें 24 कर्मिकों ने बतौर प्रतिभागी भाग लिया। इसमें सफल प्रथम तीन प्रतिभागियों के नाम इसप्रकार हैं : श्री सुनील कुमार गुप्ता/वि.लोको पाइ./आसनसोल, श्री प्रदीप कुमार साहू/तकनी./टीआरएस, एवं श्री मदन कुमार सिंह/याता.निरीक्षक/आसनसोल।

उक्त में से प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आनेवाले प्रतिभागियों को क्षेत्रीय रेल स्तर की संबंधित प्रतियोगिताओं (01 एवं 02 जुलाई 2024) में भाग लेने का अवसर मिला। इन 12 कर्मिकों में से 04 कर्मिक क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध लेखन और हिंदी टिप्पण प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं में सफल रहे। दिनांक 29.07.2024 को महाप्रबंधक महोदय के कर-कमलों द्वारा इन्हें पुरस्कृत होने का सौभाग्य मिला। पुरस्कृत होनेवाले चौथे प्रतिभागी श्री एम.के.सिंह/यातायात निरीक्षक/आसनसोल हैं।



महाप्रबंधक श्री एम.के.देउस्कर श्री मनीष रंजन/याता.निरी. को पुरस्कृत करते हुए। साथ में परिलक्षित अपर महाप्रबंधक श्री सुमित सरकार और मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वीरभद्र विश्वकर्मा।



महाप्रबंधक श्री एम.के.देउस्कर श्री दिनेश कुमार/तकनी./डीजल शेड को पुरस्कृत करते हुए। साथ में परिलक्षित अपर महाप्रबंधक श्री सुमित सरकार और मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वीरभद्र विश्वकर्मा।



महाप्रबंधक श्री एम.के.देउस्कर श्री प्रदीप कु.साहू को पुरस्कृत करते हुए। साथ में परिलक्षित अपर महाप्रबंधक श्री सुमित सरकार और मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वीरभद्र विश्वकर्मा।



‘ई.ऑफिस में हिंदी में काम कैसे करें’ - विषय पर 20.06.2024 को आयोजित कार्यशाला का विहंगम दृश्य। इस अवसर पर गोरखपुर से पधारे विशेषज्ञ वक्ता, श्री श्याम बाबू शर्मा ने रोचक शैली में उक्त विषय की व्यावहारिक जानकारी दी। विभिन्न विभागों के 09 अधिकारियों के अलावा 35 कर्मिकों ने इसमें भाग लिया।

‘ई.ऑफिस में हिंदी में काम कैसे करें’ - विषय पर 20.06.2024 को दो सत्रों में आयोजित कार्यशाला में अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री आशीष भारद्वाज गोरखपुर से पधारे विशेषज्ञ वक्ता, श्री श्याम बाबू शर्मा का स्वागत करते हुए। बीच में राधि/आसनसोल, डॉ.मधुसूदन दत्त।

*** मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न**

(06.05.2024) : मंडल रेल प्रबंधक श्री चेतनानंद सिंह की अध्यक्षता में मार्च, 2024 तिमाही की ‘मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति’ की बैठक संपन्न हुई। इस अवसर पर अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी-सह-अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं शाखा अधिकारीगण बतौर समिति सदस्य उपस्थित थे। राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में विभागों के दायित्वों और उसमें राजभाषा कर्मिकों की भूमिका पर चर्चा हुई।



राजभाषा पखवाड़ा-2024

राजभाषा पखवाड़ा-2024 का उद्घाटन सत्र : 18.09.2024 को दामोदर सभाकक्ष में तत्कालीन अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री आशीष भारद्वाज की अध्यक्षता में दीप-प्रज्ज्वलन के साथ राजभाषा पखवाड़ा का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री चेतनानंद सिंह के ‘हिंदी दिवस संदेश’ का लोकार्पण हुआ और अधिकारियों एवं कर्मिकों को राजभाषा संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर रेलकर्मियों के बच्चों के लिए ‘हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता’ आयोजित कराई गयी। बराचक, आसनसोल स्टेशन में कार्यरत कर्मिकों के बच्चों के साथ मंडल के विभिन्न विभागों के कर्मिकों के बच्चों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में सुश्री पलक सिंह/सुपुत्री श्री धीरज सिंह/स्टे.प्र./बराचक, सुश्री आध्या प्रसाद/सुपुत्री श्री पंकज कुमार/काधी/कार्मिक विभाग, कुमार अनमय/सुपुत्र श्री अभय कुमार/मु.टि.परी./आसनसोल क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे।



राजभाषा पदार्पण :- मंडल के विभिन्न विभागों में हिंदी माध्यम से निपटाए गए कार्यों को दामोदर सभाकक्ष में 26.09.2024 को करीने से प्रस्तुत किए थे। इसका अवलोकन मंडल रेल प्रबंधक श्री चेतनानंद सिंह के नेतृत्व में मूल्यांकन समिति के श्री सरोज कुमार/व.मं.वि.प्र., श्री रजनीश कुमार/व.मं.वि.इंजी.टीआरडी और राजभाषा अधिकारी डॉ. मधुसूदन दत्त ने किया। कार्यों की मात्रा और विविधता के मूल्यांकन के आधार पर यांत्रिक विभाग (प्रथम), वित्त विभाग(द्वितीय) और विद्युत विभाग (तृतीय) के साथ टीआरडी, परिचालन और वाणिज्य विभाग पुरस्कार हेतु चयनित किए गए। विभागीय प्रतिनिधियों को दिनांक 04.10.2024 को विवेकानंद इंस्टीच्यूट में आयोजित 'पुरस्कार वितरण समारोह' में राजभाषा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चेतनानंद सिंह यांत्रिक विभाग द्वारा हिंदी में निपटाए गए कार्यों का निरीक्षण करते हुए।



हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (कर्मचारी वर्ग के लिए) :- दामोदर सभाकक्ष में दिनांक 19.09.2024 आयोजित इस प्रतियोगिता में मंडल के विभिन्न स्टेशनों/कार्यालयों से कुल 45 कर्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पावर प्वाइंट के जरिए बहुवैकल्पिक प्रकार के 45 प्रश्नों को पूछा गया जिसमें समसामयिकी के साथ-साथ राजभाषा विषयक प्रश्न भी शामिल थे। इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :- श्री मनीष रंजन(याता.निरी.), श्री वीर बहादुर सिंह(ट्रेन मैनेजर/पैसेंजर) और श्री विनय कुमार(पावर कंट्रोलर) क्रमशः प्रथम,द्वितीय व तृतीय रहे।



राजभाषा पखवाड़ा-2024 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह (विवेकानंद इंस्टीच्यूट/04.09.2024) झलकियाँ : 04.10.2024 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर एक हिंदी काव्य-गोष्ठी का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम सुश्री सूर्याश्री की आकर्षक नृत्य प्रस्तुति और श्री पीयूष केशरी की भाव-प्रवण भजन-प्रस्तुति ने समारोह को संस्कारित ऊर्जा से भर दिया। साथ ही, हिंदी की महत्ता को दर्शाते हुए एक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। इसके उपरांत रेल अधिकारी एवं कर्मचारियों/शिक्षक ने अपनी सरस रचनाओं से उपस्थित श्रोतावृंद को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अंत में पुरस्कार वितरण के दौरान कुल 37 प्रतिभागी कर्मियों, कर्मिकों के बच्चों व विभागों और कलाकारों को प्रशस्ति-पत्र, ट्रॉफी व नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।



नुक्कड़ नाटक का एक प्रभावशाली दृश्य



काव्य-प्रस्तुति देते शिक्षक श्री अजय कुमार और बाल कवि पीयूष केशरी



नृत्य प्रस्तुत करनेवाली सुश्री सूर्याश्री बनर्जी सुपुत्री श्री शुभेंदु बनर्जी/ वरि.से.इंजी./बॉक्स एन डिपो/अंडाल को पुरस्कृत किया गया।



नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करनेवाले कलाकारों को अपर मुराधि एवं राधि द्वारा पुरस्कृत किया गया।



- राजभाषा पखवाड़ा-2024 के कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रस्तुति देनेवाले प्रतिभागियों और विभागों को प्रशस्ति-पत्र और ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया गया।
- क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न (24.10.2024) : zoom के ई.लिक के जरिए क्षौराकास की बैठक महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे श्री मिलिंद के. देउस्कर की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उक्त बैठक में आसनसोल मंडल की ओर से उप

मुख्य राजभाषा अधिकारी-सह-वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री राहुल राज के साथ राजभाषा अधिकारी डॉ. मधुसूदन दत्त ने भाग लिया।

- **स्वच्छता पखवाड़ा-2024 के दौरान राजभाषा विभाग की भागीदारी :** इस अवसर पर 'स्वच्छता ही सेवा' थीम पर आधारित जसीडीह और मधुपुर में ईएनएचएम/यांत्रिक विभाग और राजभाषा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित कराए गए। मधुपुर में 28.09.2024 को मधुपुर में रेलकर्मियों के बच्चों के लिए 'हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता' आयोजित हुई। बच्चों ने उत्साहपूर्वक स्वच्छता की विषयवस्तु के लेकर सुंदर कविताएँ प्रस्तुत कीं। इसी की अगली कड़ी के रूप में जसीडीह में 30.09.2024 को रेलकर्मियों के लिए हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित हुई।



साहित्य - सरिता

राजभाषा का महाकुंभ : अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

(आलेख) : डॉ. मधुसूदन दत्त/
राजभाषा अधिकारी/पूर्व रेलवे//आसनसोल

भारत देश : संस्कार और संस्कृति का देश है। भारतीयों में उत्सवों और लोक संस्कृति को लेकर अपार उत्साह रहता है। इसी के बहाने उल्लास की मनोभूमि का निर्माण होता है। देश विविधताओं का देश होते हुए भी इसी प्राण-तत्त्व के कारण जीवंत और गतिमान रहता है। नियमित अंतराल पर देश के चार प्रमुख शहरों - प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुंभ और अर्धकुंभ मनाने की परंपरा है। देश के कोने-कोने से लाखों-लाख की संख्या में श्रद्धालु जुटते हैं और वहाँ प्रवाहित पवित्र नदियों में स्नान करके स्वयं को धन्य मानते हैं। आस्था के इस महापर्व में तमाम प्रकार के विवाद-विद्वेष भूल-भाल कर श्रद्धालु समवेत भाव से एक आह्वान से स्पंदित होते हैं - रोमंचित होते हैं।

ऐसे ही रोमांच, स्पंदन और उल्लास का भाव राजभाषा के महाकुंभ में भी जगता है। वाराणसी (2021), सूरत (2022) और अब पुणे (14-15 सितंबर, 2023) में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की सार्थकता और सफलता के यही मायने हैं। आसनसोल मंडल एवं चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना के राजभाषा अधिकारी के रूप में मुझे सूरत एवं पुणे में आयोजित द्वितीय एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का मूलभूत उद्देश्य यही है कि अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, उत्पादन इकाइयों आदि में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों/कर्मिकों को व्यापक रूप से एक मंच पर जोड़ा जा सके। राजभाषा के प्रयोग-प्रसार-विकास में सक्रिय रहनेवाले राजभाषा साथियों के अनुभवों को साझा किया जा सके। सच पूछा जाए तो यह राजभाषा का साझा मंच है, जिस पर माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह और उनकी सक्रिय एवं समर्पित प्रशासनिक टीम की ओर से आकुल आह्वान गुंजायमान रहता है। हमें राजभाषा हिंदी को उसके वास्तविक सम्मान दिलाने के लिए सदैव जागरूक रहना है।

राजभाषा के परम अभिभावक माननीय गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का पहला चरण 2021 में भगवान शिव की नगरी वाराणसी में पड़ा। याद कीजिए वाराणसी या बनारस की पवित्र भूमि खड़ी बोली

हिंदी के उद्भव और विकास की पूर्वपीठिका रचती है। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र और उनकी समकालीन साहित्यिक मंडली ने खड़ी बोली हिंदी की विकास एवं विस्तार में अहर्निश योगदान किया था। प्रताप नारायण मिश्र, राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद, बाल मुकुंद गुप्त, हरिऔध, देवकी नंदन खत्री, गोपाल गहमरी, बंग महिला आदि के समर्पित प्रयास से खड़ी बोली हिंदी का साहित्यिक रचना-संसार समृद्ध होता गया - और कई मायनों में आधुनिक भी होता गया। फिर उसके बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कमान संभाली। प्रसाद, पंत, महादेवी, निराला, प्रेमचंद, सुदर्शन, अशक, मैथिली शरण गुप्त आदि की मंडली का साहित्यिक कर्म-क्षेत्र वाराणसी/प्रयागराज के आस-पास ही रहा। महामना मदन मोहन मालवीय जी के सद्प्रयासों से स्थापित बी.एच.यू. ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभायी।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का दूसरा अध्याय 2022 में भारत की पहली औद्योगिक नगरी सूरत के पं. दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में प्रारंभ हुआ। पवित्र नर्मदा नदी के तट पर बसे इस नगरी के आस-पास के क्षेत्र में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानियों की जन्म-स्थली रही है। महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, विनोबा भावे, भीकाजी कामा, मणि बेन पटेल, अब्बास जी तैय्यब, नरहरि पारिख आदि के नेतृत्व में अनेक मोर्चे पर स्वतंत्रता-यसंग्राम की अलख जगायी गयी थी और सभी का एकमत रहा कि हिंदी भाषा से ही भारत को एकसूत्र में बाँधा जा सकता है।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का तीसरा अध्याय 2023 में श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, बालेवाड़ी, पुणे में लिखा गया। महाराष्ट्र की इस नगरी की अपनी अहमियत है। स्वतंत्रता-संग्राम और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में इस नगरी का बड़ा योगदान रहा है। महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्री फुले, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक आदि के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। सभी ने विचारों के संवाहक के रूप में अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिंदी या मातृभाषा को अपनाने पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त पुणे हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का केंद्र रहा था। स्वतंत्रता पूर्व यहीं से एक-से बढ़कर एक उत्कृष्ट हिंदी फिल्मों का निर्माण हुआ, जिसका जन-मानस पर प्रेरक प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेकर मुझे अपने विशाल राजभाषा परिवार से जुड़ने का मौका मिला। उनके अनुभवों से अवगत होने का प्रेरणादायी अवसर मिला। राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के सुझावों को साझा करने का मौका मिला। इन सुझावों को अपने-अपने कार्यालयीन क्षेत्रों में क्रियान्वित करने से इसके सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे। हम राजभाषा अधिकारीगण को यहाँ से प्रेरणा और प्रोत्साहन का जो ऊर्जा और आलोक यहाँ से अर्जित हुआ है, उससे अपने-अपने क्षेत्र को ऊर्जस्वित एवं आलोकित करने को कृत संकल्प हैं।

रिपोर्तार्ज (प्रस्तुति : पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता/वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग / राजभाषा विभाग)

‘डरिए मत, अपनी मातृभाषा की सुगंध का समावेश करके हिंदी बोलिए।’

- श्री निशीथ प्रमाणिक/तत्कालीन माननीय गृह राज्य मंत्री (08.03.2023)

तारीख थी - 08 मार्च, 2024। दिन था - शुक्रवार। संयुक्त रूप से ‘विश्व महिला दिवस’ और ‘महा शिवरात्रि’ का शुभ अवसर था - जब पश्चिम बंगाल की सिलीगुड़ी के न्यू चमटा टी स्टेट के रमणीक वातावरण में अवस्थित ‘मेफेयर रिजॉर्ट’ के भव्य सभाकक्ष में गृहमंत्रालय (राजभाषा) के तत्वावधान में ‘पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह’ में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सबसे पहले पंजीकृत होने और विभाग की ओर से स्नेहोपहार प्राप्त किया गया। अल्पाहार का लाभ उठाने के क्रम में विभिन्न शहरों और कार्यालयों से पधारे राजभाषा प्रतिनिधियों को पारस्परिक मिलने-जुलने का सुअवसर मिला। अपने-अपने अनुभवों और सुझावों को साझा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सम्मेलन का एक बड़ा उल्लास और उद्देश्य यह भी है। सभाकक्ष में मंचस्थ गणमान्य अतिथियों में निदेशक/राजभाषा श्रीमती अंशुली आर्या, मिजोरम विश्विद्यालय के कुलपति प्रो.डी.सी.डेका, बर्नपुर/दुर्गापुर ईस्को के प्रबंध निदेशक श्री वीरेंद्र प्रताप सिंह आदि शामिल थे। मंच संचालको की जोड़ी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में बंगाल क्षेत्र की उपादेयता

पर प्रकाश डालते हुए केशव चंद्र सेन, रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, सुभाष चंद्र बोस जैसे महापुरुषों के योगदान को याद किया। मंच संचालिका भावना ने गोपाल सिंह नेपाली सुप्रसिद्ध कविता का सस्वर पाठ किया तो सम्राट बंध गया :-

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो

हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो !

शृंगार न होगा, भाषण से, सत्कार न होगा, शासन से

यह सरस्वती है जनता की, पूजो, उतरो सिंहासन से !

इसे शांति में खिलने दो, संघर्ष-काल में तपने दो

हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।

बीच-बीच में उन्होंने अपनी स्वरचित कविताओं की पंक्तियाँ भी दोहराते हुए सभा से सीधा संवाद भी किया। इसी बीच मंच संचालक ने भी यथार्थवादी अपनी संक्षिप्त कविताओं का पाठ किया। माननीय गृह राज्यमंत्री श्री निशीथ प्रमाणिक के पधारने के उपरांत पूरे सम्मान के साथ राष्ट्रगान का पाठ हुआ। निदेशक/गृहमंत्रालय श्रीमती अंशुली आर्या और उनकी टीम के अधिकारियों ने अंगवस्त्रम एवं स्मृतिचिह्न देकर मंचस्थ गणमान्य अतिथियों को सम्मानित किया। निदेशक/गृहमंत्रालय श्रीमती अंशुली आर्या ने अपने स्वागत अभिभाषण में सर्वप्रथम 'विश्व महिला दिवस' और महाशिरात्रि की शुभकामना दी। भाषा के संरक्षण और विकास में महिलाओं के योगदान को योगदान को रेखांकित किया। राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के विविध आयामों और उसकी चुनौतियों को दूर करने में 'कंठस्थ : 2.0' स्वदेशी सॉफ्टवेयर की सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डाला।



मिजोरम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सी.डी.डेका ने राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम क्षेत्र में भी हिंदी क्रमशः लोकप्रिय हो रही है। सरकारी संस्थानों में जितना चाहिए, उतना प्रयोग-प्रसार नहीं हो सका है। धीरे-धीरे हो रहा है। सब कुछ एक दिन में नहीं बदलेगा। यह एक दिन में नहीं होगा, मगर मुझे विश्वास है कि एक दिन जरूर होगा।'

हिंदीतर भाषी प्रो. डेका का यह सूत्र वाक्य (यह एक दिन में नहीं होगा, मगर मुझे विश्वास है कि एक दिन जरूर होगा।) हिंदी के स्वर्णिम भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है।

करतल ध्वनि के बीच माननीय केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री निशीथ प्रमाणिक ने अपना अभिभाषण प्रस्तुत किया। मैं उनके अभिभाषण को ज्यों-का-त्यों (यादास्त के आधार पर) प्रस्तुत करना आवश्यक समझता हूँ :-

'मंच पर उपस्थित निदेशक श्रीमती आर्या जी, सभा में उपस्थित आप सभी को 'विश्व महिला दिवस' और महाशिरात्रि की हृदय से शुभकामना। औपचारिक भाषण करने के पहले मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ। यह जरूरी भी है। 2021 में, मैं इस विभाग में नियुक्त हुआ। गृहमंत्रालय के साथ राजभाषा के काम-काज से भी जुड़ा। मुझे उस समय इतना अच्छा हिंदी नहीं आता था। मेरा सीनियर माननीय गृहमंत्री अमित शाह जी ने मुझसे कहा कि देखो, हिंदी बोला करो। तूम डरो मत। बेहिचक हिंदी बोलो। गलती होता है तो होने दो। बस हिंदी बोलना मत छोड़ो। मैं भी गुजराती हूँ। मैं भी हिंदी बोलता हूँ। अपनी मातृभाषा गुजराती 'टच' के साथ हिंदी बोलता हूँ। इसलिए तूम भी मत घबराना। अपना सीनियर का इस बात से मेरा भीतर का भय दूर हो गया। हिंदी बोलने लगा। उस समय, जैसा भी- टूटा-फूटा बोलना आता था, वैसा ही बोलने लगा - बोलता गया। और, आप लोग देखो ! मैं हिंदी बोल रहा हूँ। अपनी मातृभाषा बंगला के सुगंध को मिला कर, आप लोग से हिंदी में बात कर रहा हूँ। बिना डर के - बिना किसी हिचक के। आप लोगों को भी मैं यही कहता हूँ कि अपना-अपना विभाग में, आफिस में - हिंदी के कार्य-व्यापार को इसी तरह से आगे बढ़ने दीजिए। यदि कोई बांग्ला, असिमिया, मिजो, नेपाली टच के साथ हिंदी बोलता है, इसे उसी रूप में आगे बढ़ने दीजिए। हिम्मत दीजिए उसको कि वह इस दिशा में और आगे बढ़े। हिंदी को समृद्ध करे।



अपने इस वक्तव्य के बाद माननीय मंत्री महोदय ने जो कुछ कहा, उस फिर कभी कुछ कहा जाएगा, किंतु उपरोक्त आत्मीय संभाषण में श्री प्रमाणिक जी ने बहुत बड़ी बात कह दी है- अधिकतम सारांश प्रस्तुत कर दिया। जी हाँ, हिंदी इसी नैसर्गिक ऊर्जा, उत्साह और उल्लास के साथ आगे बढ़ेगी। नेपाली जी की बात एक बार फिर :-

क्यों काट रहे, पर पंछी के, पंहुंची न अभी यह गांवों तक
क्यों रखते हो, सीमित इसको, तुम सदियों से, प्रस्तावों तक
औरों की भिक्षा से पहले, तुम इसे सहारे अपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो !!

माननीय गृह राज्य मंत्री श्री निशीथ प्रमाणिक और मिजोरम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्री डेका के आत्मीय संभाषणों में काफी कुछ निहित है। अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग-प्रचार-प्रसार के अभियान में यदि इनके संदेश-सूत्रों को पूरी हार्दिकता के साथ लागू किया जाए तो बड़े सुखद परिणाम मिलेंगे। दूरी घटेगी, दहशत हटेगी, भेद मिटेगा, देरी नहीं होगी और हिंदी को बेखबर ऊँची उड़ान मिलेगी।

(शंकर मिश्रा /स्टेशन प्रबंधक/लाहाबन की दो कविताएँ)

हौसला मरा नहीं करता

हुई है नई सुबह मुझे गाने दो । अधीर है उम्मीदों की चिड़ियाँ/ मिल आपसी घोसलें बनाने दो।
करूँगा शाम को घर वापसी, है वादा हमारा अहल-ए-दिल से,
रखो सारे लिखत व साजो-समान, नए चेहरों से पहचान बनाने दो।
सीख को भटकना घाटा नहीं है, तजुर्बे का हिमायती बनो।
समय के संग नुस्खे घिस जाते हैं, अदब से नई धार चढ़ाने दो।
कभी चाह हो , तुम भी साथ चलना जिंदगी में कल का क्या भरोसा।
निखरा है दिल में जो भी ख्वाब, उन्हें हकीकत के पंख लगाने दो।
खुला है अभी तो आसमान, कदम अनंत तक बढ़ाने दो।
खोजूँगा अपने अस्ल में ही समाधान अभी कछ मिट्टी ताबिश के उड़ाने दो।

रुठना-मनाना भूल गये हैं। (कविता)

कोई रुठ कर पूछता न अब, है दुनिया बदली, मैं बदला कब?
शरारत के दिन थे कि बचपन गए, थी जिनसे शिकायत, उन्हीं से गले।
राहों में अनजान हुए नहीं तब, कोई रुठ कर पूछता न अब।
चिड़ियों के वादी हुए तब भी भोर, मोहल्ले के घर नहीं कोई कोर।
है बिछड़ के भी खुद से रोता न अब, कोई रुठ कर पूछता न अब।।
बारिश में कागज की नौका-सैर, पतंग के कटने से नहीं कोई बैर
बरसों मिलने पे मिला नहीं सब, कोई रुठ कर पूछता न अब।
गुस्ताखी हुई सबक जो मिला, गमों के लहर में दिलासा जला।
मदद मांगने पे अब मिलता न अब, कोई रुठ कर पूछता न अब,।
है दुनिया बदली, मैं बदला कब ? कोई रुठ कर पूछता न अब।

बुढ़ापा (कविता)

बुजुर्ग धीरे धीरे-हाशिए पर चले जाते हैं
छूट जाते हैं, अपने होने के एकांत में
साथ लेकर उनको चलते हुए जब,
समय की गति पकड़नी कठिन होने लगती है।
उन्हें छोड़कर आगे बढ़ने की संभावना
और युक्ति ढूँढने लगते हैं -
उनके अपने तक!
जब खलने लगती है
उन्हें अपनी उपेक्षा हृद से ज्यादा
जब देखते हैं वे, अपने बोझ से
अपनी संततियों का कंधा झुकता हुआ
खुद भी उठकर चले जाते हैं बहुत बार,
चहल-पहल और
गहमा-गहमी की परिधि से बाहर कहीं!!
बुजुर्गों की जरूरतों, उनकी परेशानियों की आवाज
बैठने लगती है।

धीरे-धीरे उन्हें सुनने वाली श्रवणेंद्रियां बधिर होने लगती
हैं जब!!
बुढ़ापे में उभरे रोग को, यह कह कर हल्का कर दिया
जाता है-
कि बुढ़ापा ही अपने आप में एक रोग है!
बुढ़ापे के शौक पर हँसा जाता है,
उसकी चुटकी ली जाती है!
नए पुराने में समन्वय और सामंजस्य
हमेशा उतना ही कठिन रहा है-
जितना आज है कच्ची और पक्की मिट्टी
मिल नहीं पाते -- आपस में- ठीक
से!!



धरती माँ (पर्यावरण-संकट पर आधारित आलेख)

- उपेंद्र प्रसाद /मुख्य टिकट निरीक्षक/आसनसोल

धरती को माँ का दर्जा दिया गया है। धरती-पुत्र कहना बहुत आसान है। जितनी पीड़ा माँ को हमें जन्म देने में होती है, उससे कम हमारी धरती माँ को भी नहीं होती। माँ का सपना होता है - मेरा बच्चा बड़ा होकर मेरा कोख का नाम रौशन करेगा। जब बच्चे गलत राह पर चलते हैं, तो माँ के लिए एक कलंक बन जाते हैं, और कलंक इस धरती पर बोझ बन कर रह जाता है। कलंक बहुत बड़ा जहर है, जो कई पीढ़ियों तक बरकरार रहता है।

जब हम इस धरती पर आए हैं, तो धरती माँ का लाज रखना होगा, नहीं तो हमारे कर्म का फल आने वाली कई पीढ़ियों को झेलना पड़ेगा। जितना कष्ट इस धरती को देंगे, उससे ज्यादा कष्ट हमारी माँ को भी होगा।

हमारी पल-पल की साँसे इस धरती से जुड़ी हुई है। हम जितना अत्याचार इस धरती की छाती पर करते हैं- फिर भी धरती माँ अपनी संतानों की मार को सहन करती जा रही है। ये धरती माँ हमें क्या नहीं दी है, जिससे हम खुशहाल जीवन जी सके। जंगल, पहाड़, नदी, सागर, महासागर, झरना, पर हम कितने निर्दयी हैं- जो जंगल को काटते जा रहे हैं, पहाड़ को भी तोड़ते जा रहे हैं। नदियों में अपने मल-मूत्र एवं दैनिक वस्तुओं को बहाते जा रहे हैं। जंगल कटने से वायुमंडल में जहर फैलता जा रहा है, आने वाले दिनों में हम पर्यावरण को कैसे बचाएँगे, इस धरती माँ पर बहुत बड़ा सवाल है। हम मानव योनि में जन्म तो लिए हैं, लेकिन इस धरती पर प्रकृति के साथ जो कलंक छोड़ कर जा रहे हैं उसे आने वाले पीढ़ियों को युगों-युगों तक भुगतना ही पड़ेगा। इस धरती पर हम जानवर से भी बदतर हैं, मानो उनके पास चेतना नहीं है। पर हम तो चेतनशील जीव हैं, फिर भी इन निरीह जानवरों को मार कर खा रहे हैं। उनके साथ अत्याचार कर रहे हैं। जब जंगल ही नहीं रहेगा तो जानवर कहाँ जाएँगे। हम जो जहर छोड़ रहे हैं उसे कौन परिशोधित करेगा!!

दिन प्रतिदिन प्राकृतिक संतुलन बिगड़ते जा रहे हैं। ना समय से वर्षा होती है, ना मौसम में बदलाव, जिससे मनुष्य का जीवन दर घटते जा रहा है। लगता है, कुछ वर्षों में हमारी औसत आयु 50 वर्ष से भी कम हो जाएगी। कहीं भूकंप तो कहीं सूखा इन सभी प्रकोपों को हमें ही झेलना ही पड़ेगा। ईमानवारी अपना

मनुष्य इस धरती पर माँ का आबरू है। अगर धरती माँ निर्वस्त्र हुई तो इसके जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ हम लोग ही होंगे। इस धरती पर जन्म लिए हैं तो हमारा फर्ज बनता है कि इमानदारी से अपने कर्तव्य निभायें, अन्यथा कर्ज में ही माँ के गोद में सो जाएँ। अगर हर मनुष्य अपने जीवन में पाँच पेड़ लगायें तो बहुत कर्ज इस धरती का हम उतार देंगे। पेड़-पौधे हमारे बच्चे ही

तो हैं, जो धरती पर संतुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। नदियों में गंदगी फैलाने से परहेज करें। प्रकृति से जो हमें मिला है सही ढंग से हम भोग करें तो युगों-युगों तक अमन चैन से जिन्दगी जी सकते हैं। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने से हमें नई-नई बिमारियों का सामना करना पड़ता है। जिस पथ पर लोग जा रहे हैं - नतीजे में, एक दिन इस धरती माँ का इतना शोषण हो जाएगा कि बाप के कंधे पर बेटे का जनाजा होगा। विज्ञान जितना भी विकसित हो जाए, प्रकृति प्रकोप से बच नहीं सकते। धरती पर मौसम, प्राकृतिक संसाधन सभी जीवों के लिए एक वरदान है। धरती माँ के गोद में जो बच्चे धूल-मिट्टी में खेलते-खेलते बड़े होते हैं उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती है। प्राकृतिक सम्पदा का रक्षा करना हर मानव का धर्म है, तभी हम धरती माँ का लाज बचा सकते हैं। अपने नौनिहालों के भविष्य की अगर चिंता है तो ये काम हर मानव को करना चाहिए।

सीखने की ललक (आह्वान-गीत)

- शशि कुमार साह/कार्यालय अधीक्षक/विद्युत परिचालन

सीखने की ललक को जगाना है, जगाना है, जगाना है।
जो होना हो, कामयाब या सफलता की सीढ़ी चढ़नी हो।।
तो जर्जाशे जुनून को बढ़ाना है, सीखने की ललक को जगाना है।
ये ललक को ऐसे ही बढ़ाते रहना है, और राहों की मुश्किलों को घटाना है।
नई ऊर्जा को भरकर, ज्ञान ज्योति को जलाना है,
सीखने की ललक को जगाना है, जगाना है, जगाना है।
खुद के भीतर कौशल विकास को बढ़ाना है,
नवाचार को अपनाना है राष्ट्र की प्रगति के लिए
हर एक लक्ष्य को पूरा करते जाना है, तो...
सीखने की ललक को जगाना है, जगाना है, जगाना है।

एकता (प्रेरक गीत)

-अनिल कुमार वर्मा/कनि.अनुवादक/राजभाषा विभाग/आसनसोल

आओ न हम एक हो जाएँ !! गीत
आओ न हम एक हो जाएँ
दिलों में जो डर है उसे मिल मिटाएँ
अनेकता से परे एकता की दीप जलाएँ आओ न हम एक हो जाएँ !!
आओ न हम एक नया रिश्ता बनाएँ।
अकेलेपन की जो खाई है.- क्यों न उसे हम मिल मिटाएँ आओ न हम एक हो जाएँ ।

आओ वसुदैव कुटुम्बकम् को दोहराएँ
शायद मत हमारे अनेक हों
मानव की मानवता को जगाएँ, आओ न हम एक हो जाएँ

नालायक (कहानी)

- विनय कुमार

ड्राफ्टेड पावर कंट्रोलर, पूर्व रेलवे, आसनसोल

देर रात अचानक ही, पिताजी की तबियत बिगड़ गयी। आहत पाते ही उनका नालायक बेटा उनके सामने था। माँ झाड़वर बुलाने की बात कह रही थी, पर उसने सोचा अब इतनी रात को इतनी जल्दी झाड़वर कहाँ आ पायेगा?

यह कहते हुए उसने सहज भाव से जिद करके अपने मजबूत कंधों के सहारे बाऊजी को कार में बिठाया और तेजी से अस्पताल की ओर भागा।

बाऊजी दर्द से कहराने के साथ ही उसे डाँट भी रहे थे "धीरे चला नालायक, एक काम तो हो, जो इससे ठीक से हो जाए।"

नालायक बोला :- "बाउजी , अस्पताल ! आप ज्यादा बातें ना करें, बाऊजी, बस तेज-तेज करके साँसें लेते रहिये, हम अस्पताल पहुंचने वाले हैं।"

अस्पताल पहुंचकर उन्हें डॉक्टरों की निगरानी में सौंपकर, वो बाहर चहलकदमी करने लगा, बचपन से आज तक अपने लिये वो नालायक ही सुनते आया था।

उसने भी कहीं-न-कहीं अपने मन में यह स्वीकार कर लिया था कि उसका नाम ही शायद नालायक ही है।

तभी तो स्कूल के समय से ही घर के लगभग सब लोग कहते थे कि - 'नालायक, फिर से फेल हो गया। नालायक को कोई अपने यहाँ कोई चपरासी भी नहीं रखेगा। कोई बेवकूफ ही इस नालायक को अपनी बेटी देगा।

शादी होने के बाद भी वक्त-बेवक्त सब कहते रहेंगे हैं कि इस बेचारी के भाग्य फूटे थे जो इस नालायक के पल्ले पड़ गयी।

हाँ, बस एक माँ ही है जिसने उसके असल नाम को अब तक जीवित रखा है, पर आज अगर उसके बाऊजी को कुछ हो गया तो शायद वे भी.....!

इसका ख्याल आते ही उसकी आँखें छलक गयी और वो उनके लिए अस्पताल में बने एक मंदिर में प्रार्थना करने लगा। प्रार्थना में शक्ति थी या बीमारी मामूली, डॉक्टरों ने सुबह-सुबह ही बाऊजी को घर जाने की अनुमति दे दी।

घर लौटकर उनके कमरे में छोड़ते हुए बाऊजी एक बार फिर चीखें- "अरे, छोड़ नालायक। तुझे तो लगा होगा कि बूढ़ा अब लौटेगा ही नहीं।"

उदास वो उस कमरे से निकला, तो माँ से अब रहा नहीं गया, "इतना सब तो करता है, बावजूद इसके आपके लिए वो नालायक ही है?"

विवेक और विशाल दोनों अभी तक सोये हुए हैं, उन्हें तो अंदाजा तक नहीं है कि रात को क्या हुआ होगा, बहुओं ने भी शायद उन्हें बताना उचित नहीं समझा होगा।

यह बिना आवाज दिये आ गया और किसी को भी परेशान नहीं किया, भगवान न करे कल को कुछ अनहोनी हो जाती तो? और आप हैं कि..... ?? उसे शर्मिदा करने और डाँटने का एक भी मौका नहीं छोड़ते।

कहते-कहते माँ रोने लगी थी।

इस बार बाऊजी ने आश्चर्य भरी नजरों से माँ की ओर देखा और फिर नजरें नीची कर ली।

माँ रोते-रोते बोल रही थी - 'अरे क्या कमी है हमारे बेटे में ?? हाँ मानती हूँ - पढ़ाई में थोड़ा कमजोर था तो क्या ?? क्या सभी होशियार ही होते हैं?? वो अपना परिवार, हम दोनों को, घर-मकान, पुश्तैनी कारोबार, रिश्तेदार और रिश्तेदारी सब कुछ बखूबी संभाल रहा है। जबकि बाकी दोनों जिन्हें आप लायक समझते हैं - वो दो बेटे सिर्फ अपने बीवी और बच्चों के अलावा ज्यादा-से-ज्यादा अपनी ससुराल का ध्यान रखते हैं। कभी पूछा - आपसे कि तबीयत कैसी है?? और आप हैं कि ...!'

बाऊजी बोले - 'सरला तुम भी मेरी भावना नहीं समझ पाई?? क्या तुझे भी यह लगता है कि इतना सब होने के बाद भी इसे बेटा कहके नहीं बुला पाने का, गले से नहीं लगा पाने का दुःख मुझे नहीं है। क्या मेरा दिल पत्थर का है?? मुझे..... ! हाँ सरला सच कहूँ तो दुःख तो मुझे भी होता है, पर उससे भी अधिक डर लगता है कि कहीं ये भी उनकी ही तरह लायक ना बन जाये। इसलिए मैं इसे इसकी पूर्णता: का अहसास अपने जीते जी तो कभी नहीं होने दूंगा.... !

माँ चौंक गई - 'ये क्या कह रहे हैं आप??

बाउजी - 'हाँ सरला.... यही सच है। अब तुम चाहो तो इसे मेरा स्वार्थ ही कह लो।'

कहते हुए उन्होंने रोते हुए नजरें नीची किये हुए अपने हाथ माँ की तरफ जोड़ दिये। जिसे माँ ने झट से अपनी हथेलियों में भर लिया।

और कहा - 'अरे... अरे ये आप क्या कर रहे हैं मुझे क्यों पाप का भागी बना रहे हैं। मेरी ही गलती है कि मैं आपको इतने वर्षों में भी पूरी तरह नहीं समझ पाई... !!

और दूसरी ओर दरवाजे पर वह नालायक खड़ा-खड़ा यह सारी बातचीत सुन रहा था। वो भी आँसूओं में तर-बतर हो गया था। उसके मन में आया कि दौड़कर अपने बाऊजी के गले से लग जाये, पर ऐसा करते ही उसके बाऊजी झंप जाते। यह सोचकर वो अपने कमरे की ओर दौड़ गया। कमरे तक पहुँचा भी नहीं था कि बाऊजी की आवाज कानों में पड़ी....

- 'अरे नालायक.. वो दवाइयाँ कहाँ रख दी गाड़ी में ही छोड़ दी क्या ?? कितना भी समजा दो इससे एक काम भी ठीक से नहीं होता!'

नालायक झटपट आँसू पोंछते हुए गाड़ी से दवाइयाँ निकालकर बाऊजी के कमरे की तरफ दौड़ गया।

‘यह क्या है साहेब?’ संतू के हाथ में चिट्ठी थी, जो उसे अभी-अभी मिली थी।

एक बाबू ने पढ़कर सुनाया - ‘संतू, तुम्हारी उम्र अगले तीन महीने बाद 60 साल हो जायेगी। तुम्हें अब काम से रिटायर कर दिया जायेगा।’

संतू तड़प कर बोला - क्यों!

संतू कुछ देर इधर-उधर ताकने लगा। फिर औजार वाला अपना बैग उठाया और बोला - ‘बाबू ऐसा क्यों? अभी भी मैं 40 के जी वाला बैग उठा सकता हूँ। मीलौं चलकर लाइन चेक कर सकता हूँ।’

बाबू ने समझाया :- ‘पर यह सब कोई नहीं सुनेगा। तुम्हें अब काम से जाना पड़ेगा। सामने का तीन महीना है। तुम अपना कार्यकाल में बहुत ही अच्छा काम किये हो। कई बार तुम्हारे कारण बहुत सवारियों की जान बची। लेकिन अब साठ साल होने पर तुम्हें रिटायर होना पड़ेगा। सरकारी नियम है, संतू!’

संतू चुपचाप सब सुन रहा था। फिर अपने काम पर चला गया। कुछ वर्ष पहले संतू का इन्चार्ज एक कम उम्र का लड़का आया। वह संतू का इन दिनों बहुत खयाल रखता है। कई बार वह संतू के डेरा भी आया।

संतू आजकल बहुत उदास रहता है। परिवार में एक लड़की है रानी। एम.ए. का पढ़ाई खत्म कर नौकरी की तलाश में है। रानी अपनी पापा का खूब खयाल रखती है।

आज शाम को जब घर आया, तब रानी खाना पका रही थी। संतू बोला- ‘बेटा मैं तुम्हारे लिए एक वर भी नहीं ढूँढ़ सका कि मेरी नौकरी खत्म होने को है। अब मैं कहीं-का नहीं रहा। इस बात पर रानी रो पड़ी।’

बोली - ‘पापा, मेरी शादी कर देने से आपका खयाल कौन रखेगा? अभी रज्जो आँटी समय निकाल कर आई थी। जाते समय बताकर गयी कि बेटा, पापा का खयाल रखना। अब मुझे एक नौकरी करना है पापा। आपने मुझे इतना पढ़ाया, इसका कुछ तो उपयोग होना चाहिये।’

देखते-देखते वो दिन आ गया। आज संतू का नौकरी का अंतिम दिन है। औजार लेकर जब सब तैयार हो रहा था तो रणजीत बाबू आकर संतू का हाथ पकड़ लिये। बोले - ‘अंकल जी, आज आप ट्रेक पर नहीं जाएंगे। आज ऑफिस में बैठिये।’

संतू बोला - ‘बाबू, मुझे जाने दीजिये। इस ट्रेक को देखे बिना मुझे चैन नहीं आयेगा। लाइन के किनारे छोटे-छोटे पौधे, पत्थर-बोल्डर का वह ढेर -- सबसे मुझे मोहब्बत हो गया है। कम-से-कम आज जाकर एकबार सबसे मिलकर बताकर तो आये कि मैं जा रहा हूँ। तुमलोग ठीक से रहना!’

रणजीत बाबू बोले :- ‘ठीक है, अंकलजी एक बार घूम आइये। संतू ने कई बार कहा कि - ‘सर, मुझे अंकल मत कहिये। आज भी आपने मुझे अंकल ही कहा।’

लेकिन रणजीत बाबू बोले - ‘अंकल जी, आप मुझे नहीं पहचाने। आपलोग जब खड़गपुर के थे, तब हमारा डेरा आपही के पास था और हमारे परिवार में बहुत दोस्ती थी। फिर अंटी जी का तबीयत खराब हुआ और आपका यहाँ तबादला हो गया तो फिर सम्पर्क टूट गया। मैं यहाँ आते ही आपको पहचान गया था। लेकिन अपना परिचय नहीं दिया। अंकलजी वो रानी कहाँ हैं? क्या उसकी शादी हो गयी? हम बचपन में एक साथ खेलकूद करते थे और स्कूल जाया करते थे।’

संतू बोला : ‘सर, आप तो मेरे डेरा पर आये हैं। वहीं रानी है जिसने आपको चाय लाकर दिया था। लेकिन आप तो परिचय नहीं दिये और शायद रानी भी आपको पहचान नहीं पायी।’

रणजीत - ‘नहीं नहीं अंकलजी, अब सर मत बोलिये, मेरे नाम पुकार कर बोलिये। आपकी तो और कोई परेशानी नहीं है ना? अपने जीवन को सुंदर बनाइये। खूब आराम कीजिये।’

संतू ने कातर स्वर में कहा - ‘कैसे आराम करूँ बेटा? मेरा तो समय खत्म हो गया। अब तक बेटे की शादी भी हम नहीं कर सके।’

रणजीत - 'अरे, इतना भी निराश मत होइए। खुशी-खुशी रिटायर होकर घर जाइए और घर-परिवार के साथ जीवन का भरपूर आनंद उठाइए। ऑन डेट पेमेंट में राजी-खुशी भाग लीजिए। वहाँ भी आज आप ही जैसे 28 लोग रिटायर होने जा रहे हैं। सब सिस्टम से बंधे हैं, अंकल। कल होगा तो मैं आपके डेरा पर आऊँगा।'

आज शाम को रंजीत बाबू संतू के घर आयेंगे। जल्दी-जल्दी घर का काम निपटा कर बाप-बेटी इंतजार कर रहे थे कि दरवाजा में किसी का आहट सुनाई दिया तो रानी ने जाकर दरवाजा खोल दी। रंजीत बाबू उसे अवाक् से देखने लगे। वह छोटी-सी गुड़िया-सी रानी अब एक जवान बहुत खुबसूरत चेहरा लेकर सामने खड़ी है।

रणजीत बोला - 'ओ तो - तुम रानी हो? रानी ने सर झुकाकर बोली - हाँ। आइये, अंदर आइये।

रणजीत - 'यह क्या बात रानी तुम मुझे पहचान गयी तो फिर आप क्यों?

अब तक संतू भी आ गया। सब मिलकर बातें करने लगे। बात करते-करते काफी देर हो गयी।

अब रणजीत बोला : 'अंकल जी, एक रिक्वेस्ट है कि और कहीं रिश्ता नहीं लग रहा तो मैं रानी से शादी करना चाहता हूँ।

संतू कुछ जवाब नहीं दे सका। रानी बोली : 'लेकिन एक बात है। अपने माँ-पिताजी में से किसी को बताये बिना यह आप अकेले फैसला कैसे ले लिए?।

रणजीत बाबू ने उसकी बात काट कर बोले : 'वे दोनों ही अब इस दुनिया में नहीं। अगर तुम्हारी कोई परेशानी है तो बताओ?'

रानी ने बोली :- 'मैं एक नौकरी की तलाश में हूँ। जब तक नौकरी नहीं मिलती, तब तक तुम इंतजार करोगे? और मेरी शादी के बाद मेरे पापा को कौन देखेगा?

अब रणजीत बोला :- 'अंकल जी, अब उसी दिन मैं आपके घर आऊँगा, जिस दिन मेरे साथ बारात रहेगी। और आप आज से मेरे पापा बनकर रहियेगा।

चारों तरफ चुपके-से मानो सारी शहनाइयाँ गूँज उठी। रानी और संतू के तन और मन भी मानो अंदर तक भीग गये। अंतरात्मा के इंद्रधनुष की सतरंगी आभा उनके चेहरों पर छा गयी थी।

गण का तंत्र : लोकतंत्र (विचारात्मक आलेख)

-संजय राउत/अनुवादक/राजभाषा विभाग/आसनसोल

हमारा देश एक गणतांत्रिक देश है। आज गणतंत्र दिवस है, वो भी 75वां। लगता है जैसे बूढ़ा हो गया है, एकदम सीनियर सिटीजन जैसा। हालांकि स्वतंत्र देश के लिहाज से अभी व्यस्कता की अवस्था कही जा सकती है।

संवैधानिक प्रावधान के अंतर्गत शासन व्यवस्था :

यह संवैधानिक सर्वोच्चता प्रदान करता है (संसदीय सर्वोच्चता नहीं, क्योंकि इसे संसद के बजाय एक संविधान सभा द्वारा बनाया गया था) और इसके लोगों द्वारा इसकी प्रस्तावना में एक घोषणा के साथ अपनाया गया था। संसद संविधान की अवहेलना नहीं कर सकती।

परंतु, आज इसमें 'गण' कहाँ है? गणतंत्र के मूल सिद्धांत के अनुरूप शासन-तंत्र के केंद्र में तो हरगिज़ नहीं। हाँ, हासिये पर जरूर कह सकते हैं।

बैठकर आसमान में
देखते क्या हो
हम तो मिट्टी के हैं,
इसलिए मिट्टी पे हैं।
तंत्र नहीं जानता
अंतिम पायदान पे ही सही
पर गण तो हूँ। -- ('गणतंत्र की पौध' से साभार)

'गणतंत्र' का सर्वाधिक मूल्यवान चीज क्या है? निश्चित रूप से "संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार का किसी भी सामान्य स्थिति में स्थगन अथवा निषिद्ध न किया जाना" ही इसकी विशेषता है।

लेकिन आज देश के आमजन अर्थात् गण को ही दरकिनार कर दिया गया है। आजादी के बाद 26 जनवरी, 1950 को संविधान निर्माताओं ने, देशवासियों के वास्तविक प्रतिनिधियों ने, आजादी के संघर्ष में तपे-तपाए हमारे आधुनिक मनीषियों ने देश गणों को, आमजनों को शासन की धूरी मानते हुए देश को अन्यायनय मूल्यों से सुसज्जित करते हुए, इसे एक 'गणतांत्रिक देश' के रूप में विभूषित किया था। परिणामस्वरूप, देश के अन्त्योदय वर्ग अर्थात् सबसे निचले वर्ग से आरंभ करते हुए शीर्ष वर्ग तक, दूसरे शब्दों में कहें तो मजदूर वर्ग, किसान समुदाय, विभिन्न पेशेवर वर्ग, व्यवसाय व उद्योग जगत सभी ने खुलकर देश के विकास में अपना योगदान दिया। धीरे-धीरे देश विकास के पथ पर आगे बढ़ता चला गया। कृषि-उपज के क्षेत्र में आत्म निर्भरता आई, कल-कारखाने खुलते चले गए, शिक्षा जगत में भी उल्लेखनीय प्रगति आई, मजदूरों की जी-तोड़ मेहनत के बल पर सड़क, पुल आदि ढांचागत निर्माण के क्षेत्र में बाढ़-सी आ गई। कुल मिलाकर देश ठीक-ठाक प्रगति के पथ पर चल पड़ा था।

लेकिन अचानक ऐसा क्या हो गया कि इस विकास के दौड़ में समाज का आधार स्तम्भ समझा जाने वाला मजदूर, कृषक व निम्न मध्यवर्गीय समाज पिछड़ता चला गया। मजदूरों की स्थिति दयनीय है, तो समाज का अन्नदाता कृषक आज कठोर परिश्रम के बाद भी कर्ज में डूबे हुए हैं और आत्महत्या करने को विवश हो रहे हैं।

इस घोर नकारात्मक स्थिति को देखकर रामवृक्ष वेनीपुरी की उक्ति : "वह जो चमकीली, सुंदर, सुघड़ इमारत आप देख रहे हैं; वह किसपर टिकी है ? इसके कंगूरों (शिखर) को आप देखा करते हैं, क्या आपने कभी इसकी नींव की ओर ध्यान दिया है?", की ओर बरबस ध्यान खींच जाता है। आगे वे आशा की दृष्टि से लिखते हैं: "इस नए समाज के निर्माण के लिये भी हमें नींव की ईंट चाहिए।

अफ़सोस कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

लाखों-लाख गाँवों का नव-निर्माण! हज़ारों शहरों और कारखानों का नव-निर्माण! कोई शासक इसे संभव नहीं कर सकता। ज़रूरत है ऐसे नौजवानों की, जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें।"

ये पंक्तियाँ अपने आप में बहुत कुछ कह जाती हैं। हाँ, हम 'गण' की बात कर रहे थे। आज के युवावर्ग रोजगार विहीन है, मजदूर व कृषक वर्ग अपने को छला महसूस कर रहे हैं, उद्योगपति फल-फूल रहे हैं, राजनीति एक ऐसा मंच हो चुका है, जहाँ पहुँचकर सभी के कष्ट, अभाव, निर्धनता, बेकारी आदि लुप्त हो जाती है, यहाँ आकर समस्त पाप-अपराध मानो धुल जाते हैं। जहाँ एक गरीब किसान कुछ रुपयों के कर्ज के कारण आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो रहे हैं, तथाकथित धनपतियों, रसूखदारों ने अरबों रुपये डकारने के बाद शान के साथ समूचे तंत्र को अंगूठा दिखा रहे हैं, और तो और देश भी छोड़कर चले जा रहे हैं। किसके बल पर ये सब होता है, एक खुले रहस्य की तरह है। मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' जिसे 'खंडित रामायण' भी कहा जाता है, की कुछ पंक्तियाँ यहाँ सार्थक जान पड़ती हैं : -

विचित्र प्रोसेशन, //गम्भीर क्विक मार्च.... //.....//
मिलते हैं मेरे देखे हुआ-से // लगता है उनमें कई प्रतिष्ठित पत्रकार //
इसी नगर के!! // बड़े-बड़े नाम अरे कैसे शामिल हो गये इस बैण्ड-दल में! //..... //..... //
कर्नल, बिग्रेडियर, जनरल, मॉर्शल // कई और सेनापति सेनाध्यक्ष //
चेहरे वे मेरे जाने-बूझे से लगते, // उनके चित्र समाचारपत्रों में छपे थे, // उनके लेख देखे थे, //
यहाँ तक कि कविताएँ पढ़ी थीं // भई वाह! //
उनमें कई प्रकाण्ड आलोचक, विचारक जगमगाते कवि-गण // मन्त्री भी, उद्योगपति और विद्वान //
/यहाँ तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात // डोमाजी उस्ताद
बनता है बलवन // हाय, हाय!! // यहाँ ये दीखते हैं भूत-पिशाच-काया // भीतर का राक्षसी स्वार्थ अब //
साफ़ उभर आया है, // छिपे हुए उद्देश्य // यहाँ निखर आये हैं, //
यह शोभायात्रा है किसी मृत-दल की!!" (अंधेरे में – से उद्धृत)

आज जो भी विकास हुआ है, हो रहा है, उसके पीछे एकमात्र समाज के आमजन ही हैं, जिसमें मजदूर, किसान, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक, सरकारी कर्मचारी, व्यवसाय जगत आदि की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष भूमिका है, परंतु श्रेय जाता है किसे 'गणतंत्र' को?? नहीं! "दलतंत्र" को, "पूँजीतंत्र" को दल-विशेष के दलपति को।

खैर, कहने का एक आशय यह भी है कि हमें गणतंत्र की सही मूल्यों व भावनाओं को पहचानने की आवश्यकता है, किसी भी राजनीतिक दल के मायावी दलदल में न फंसकर अपने अधिकारों के साथ-साथ दायित्वों को चिह्नित करके, उस पर अमल करना चाहिए। राजनीति के सार्थक पहलुओं पर भी ध्यान देना जरूरी है।

जय हिंद!

-केशव कुमार /तकनीशियन-।।/टीआरएस/आसनसोल

स्वतंत्रता के इतने वर्षों के पश्चात भी भारत हिंदी को राजभाषा के रूप में वह पहचान नहीं दे पाया है जो दुनिया के देशों ने अपनी भाषा को दी है। इसका मुख्य कारण इच्छा-शक्ति की कमी और अनुवाद पर निर्भरता है। मात्र अनुवाद के सहारे हिंदी लाने का प्रयत्न कभी फलीभूत नहीं हो सकता, अवश्यकता है मूल रूप से हिंदी में काम करने की, एक वृक्ष के स्थान पर दूसरा वृक्ष तभी लगाया जा सकता है, जब पहले वृक्ष को हटाया जाए। यहां पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि बड़े वृक्ष की छाया में छोटा वृक्ष पनप नहीं सकता। भाषा प्रयोग के कारण ही विकसित और प्रसारित होती है। भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए किए गए प्रावधानों एवं सुविधाओं के बावजूद, विरोध भले ही प्रत्यक्षतः नजर न आए, किंतु प्रगति की वास्तविकता सर्वविदित है। संवैधानिक प्रावधानों एवं सरकार की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की निति के बावजूद कुछ लोग हिंदी से परहेज करते हैं।

वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न भाषा की सरलता और सहजता का है। माना जाता है कि प्रशासनिक हिंदी दुरुह और अस्पष्ट हो जाती है। द्विभाषिक सामग्री में लोग हिंदी की बजाए अंग्रेजी के पाठ को इसलिए पढ़ना चाहते हैं क्योंकि इसमें इन्हें स्पष्टता अधिक महसूस होती है। जब तक हिंदी भाषा का पाठ अनुवाद के रूप में हमारे सामने आएगा तब तक सहज नहीं हो सकता।

यह आरोप मिथ्या नहीं है कि वर्तमान कार्यालयी हिंदी में यदा कदा एक हद तक कृत्रिमता अथवा अटपटापन भी देखने को मिलता है। सच तो यह है कि शब्द कोई कठिन नहीं होता, वह तो प्रयोग में लाने से अपना हो जाता है। हिंदी भाषा को कठिन महसूस करने की समस्या वस्तुतः मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक अधिक है, वास्तविक शून्य। हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। जहां अंग्रेजी के उच्चारण के लिए भी शब्दकोश को देखने की अवश्यकता हो सकती है, वहीं हिंदी के लिए सिर्फ अर्थ देखने के बलए शब्दकोश की अवश्यकता पड़ती है। अंग्रेजी शब्दों की स्पेलिंग रटनी पड़ती है जबकि हिंदी के शब्दों की वर्णमाला स्वर व व्यंजन तथा बारहखड़ी को रटने से किसी भी शब्द को पढ़ना लिखना सहज हो जाता है। यही कारण है कि हिंदी में किसी भी भाषा को लिखना या इसका उच्चारण करना सरल होता है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि 'माइक्रोसॉफ्ट' के मालिक बिल गेट्स ने हिंदी भाषा और लिपि को विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक वैज्ञानिक माना है।

अतः इसमें दो राय नहीं कि राजभाषा हिंदी की सबसे बड़ी समस्या हिंदी में काम करने की प्रवृत्ति अथवा इच्छा शक्ति का अभाव है। अंग्रेजी में काम करके अपने को श्रेष्ठ समझने की मानसिकता दासता के चलते हिंदी में काम करने की लगन तो दूर, उत्साह भी पैदा होना संभव नहीं है। यह कठिनाई केवल हिंदीतर भाषियों की ही नहीं, हिंदी भाषियों की भी है। राज्यस्तर पर जो लोग हिंदी में काम करते हैं, केंद्र स्तर पर तैनात होने पर वे

अंग्रेजी का ही सहारा लेते हैं। इस स्थिति में परिवर्तन तभी संभव है, जब हमारी मानसिकता में परिवर्तन हो जाए तथा हम मूल रूप से सरकारी कामकाज हिंदी में करना शुरू कर दें।

हिंदी के प्रयोग में अटपटापन, दुरुहता, जटिलता आदि काफी कुछ इसी अनिच्छा का प्रवृत्ति का परिणाम है। जिसके चलते वे इस भाषा के प्रति अपनापन महसूस नहीं करते हैं, और सहज, सुबोध भाषा का प्रयोग तो दूर सही भाषा लिखने पर भी ध्यान नहीं देते। उच्च अधिकारियों का रवैया निचले स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी प्रभावित करता है। इन्हें लगता है कि यदि वे हिंदी का प्रयोग करेंगे तो यह समझा जाएगा कि वे अंग्रेजी के प्रयोग में अक्षम हैं। इस मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आने वाली न कठनाइयों का समाधान कई छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से काफी हद तक हो सकता है। किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त वाक्य को जोड़ने से परहेज नहीं करना चाहिए। कभी-कभी अंग्रेजी के एक शब्द को स्पष्ट करने के लिए पूरा एक वाक्य भी देना पड़ सकता है। इसे भाषिक संप्रेषण क्षमता की कमी नहीं समझना चाहिए। दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी भाषा के पूरे वाक्य के लिए हिंदी भाषा का एक शब्द ही पाप्ति हो भाषा का स्वरूप निर्धारित करते समय यह ध्यान रखना भी

बहुत अवश्यक है कि पत्र का प्रारूप किस व्यक्ति को संबोधित है। इस व्यक्ति की सामाजिक, पदीय स्थिति और हिंदी भाषिक योग्यता के अनुरूप ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्य लिखना सुविधाजनक होता है और वैसे भी कई

उप-वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करना हिंदी की प्रकृति नहीं है। जहां तक हो सके प्रशासनिक कार्यों को सरल अभिव्यक्ति ही देनी चाहिए।

कार्यालयी हिंदी की सहजता कथ्य की स्पष्टता, सरल-सुबोध वाक्यों की रचना और उपयुक्त शब्दों के चयन पर निर्भर करती है। दूसरी भाषाओं के जो प्रचलित शब्द हैं, और आम बोलचाल की भाषा में घुलमिल गए हैं, उन्हें ज्यों का त्यों ही अपना लेना चाहिए। विशेष रूप से ऐसे शब्द अंग्रेजी या उर्दू भाषा से लिए जा सकते हैं। यूं तो ऐसे शब्दों के विशुद्ध हिंदी रूप भी लिए जा सकते हैं, परंतु इससे भाषा की सहजता नष्ट होने का डर होता है और भाषा बनावटी प्रतीत होती है। उन्हीं शब्दों को अपनाना चाहिए जो स्वाभाविक लगे। यही गुण कार्यालयी हिंदी को ग्राह्य और लोकप्रिय बना सकते हैं।

राजभाषा विभाग और हिंदी सेवियों के निरंतर प्रयास के फलस्वरूप आज हिंदी भारतीय भू-भाग से बाहर निकल विश्व धरातल पर दस्तक दे रही है और यह दस्तक पूरी दुनिया में सुनी जा सकती है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय भाषाओं का सहारा ले रही हैं और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं। अपने उत्पाद को ग्राहक के मन में बसाने के लिए उनकी भाषा का सहारा लेना, इनकी मार्केटिंग स्ट्रेटेजी का प्रमुख हिस्सा है। आज इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी किसी भी मायने में अंग्रेजी से पीछे नहीं है। फिर भी यह हमारी ही मानसिकता है कि आज भी हम हिंदी को वह स्थान नहीं दे पा रहे हैं जिसकी वह सर्वप्रथम अधिकारी है।

अतः स्पष्ट है कि हिंदी को उसका उचित स्थान सम्मेलनों, अपीलों, अदेशों एवं व्याख्यानों मात्र से नहीं मिल सकता। इसके लिए अंग्रेजी का मोह छोड़कर मूल रूप से हिंदी में कार्य करना होगा, इसके महत्व एवं उपयोगिता को बढ़ाना होगा। इसके लिए हम सबको मिलकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय तथा सृजनात्मक सहयोग देना होगा।



(आलेख)

दक्षिण भारत की मलयजी सुर-साधिका : के.एस. चित्रा

-सिद्धार्थ गुप्ता : सुपुत्र पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता
वरिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग/पूरे/आसनसोल

हिंदी भाषा-विरोध का सबसे प्रबल सुर दक्षिण भारत से ही गाह-बेगाहे उभरा करता है। राजनीतिक पुट देकर चिंगारी को हवा दी जाती है। आग सुलगी नहीं कि उसमें घी-पेट्रोल डालनेवालों का हुजूम जमा हो जाता है। सुर-में-सुर मिला कर भीड़ उन्मत्त भाव से उद्वेलित होती है और 'मिले सुर : मेरा तुम्हारा.....' का सूत्र-वाक्य धूल-धुसरित हो जाता है। किंतु विद्वेष और विरोध के ऐसे ही वातावरण में एक सुर-साधिका की मलयजी आवाज गूँजती है। बेकाबू लोग-बाग अचानक ही थिर होकर , इसकी धुन पर झूम उठते हैं। समों बदल जाता है। अमृत-सुर में डूबी, शीतल - सुगंधित हवा की तरह के.एस.चित्रा की स्वर-लहरी सबको वशीभूत कर लेती है- मंत्र-मुग्ध कर देती है।

देश की सर्वाधिक मनोरम नगरियों में से एक तिरुअनंतपुरम् में कृष्णन नायर शान्तिकुमारी चित्रा (प्रचलित नाम के. एस. चित्रा) का जन्म 27 जुलाई 1963 को कृष्णन नायर के घर हुआ था। वे एक प्रसिद्ध गायक और संगीतकार भी थे। उन्हीं के मार्गदर्शन में चित्रा ने संगीत की पारंपरिक शिक्षा-दीक्षा ली। चित्रा ने कर्नाटक संगीत में अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया और उन्होंने संगीत में बी.ए. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। इसके बाद उन्होंने संगीत में स्नातकोत्तर की डिग्री पूरी की। वे 1978 से 1984 तक केंद्र सरकार की ओर से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की छात्रवृत्ति के लिए चुनी गईं।

भारत की सांस्कृतिक एकता और चेतना की सूरीली प्रतीक चित्रा जी ने दक्षिण भारत की सभी भाषाओं की फिल्मों के लिए पार्श्वगायन किया ही है, साथ ही हिंदी, बंगला, असमिया, मराठी आदि भाषाओं की फिल्मों में भी पूरी संजीदगी के साथ गीत गाये हैं। सभी प्रांत की सरकारों और फिल्म क्रिटिक्स ने चित्रा के गीतों की सूरीली तान की सराहना की और उन्हें सम्मानित भी किया। के.एस. चित्रा को उनके उत्कृष्ट पार्श्वगायन क्षमता के आधार पर छह राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार तमिल फिल्म 'सिंधु भैरवी' (वर्ष 1986), मलयालम फिल्म 'नखक्षथंगल' (वर्ष 1987), मलयालम फिल्म 'वैशाली' (वर्ष 1989), तमिल फिल्म 'मिनसारा कनवू' (वर्ष 1996) और हिंदी फिल्म 'विरासत' (वर्ष 1997) के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका की श्रेणी में कुल मिला कर छह बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त नौ फिल्मफेयर पुरस्कार(दक्षिण) और भारत के छह राज्यों से 36 विभिन्न राज्य फिल्म पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं, जैसे 16 केरल राज्य फिल्म पुरस्कार , 11 आंध्र प्रदेश राज्य फिल्म पुरस्कार , 4 तमिलनाडु राज्य फिल्म पुरस्कार , 3 कर्नाटक राज्य फिल्म पुरस्कार , 1 उड़ीसा राज्य फिल्म पुरस्कार , 1 पश्चिम बंगाल राज्य

फिल्म पुरस्कार। उन्हें लंदन की प्रतिष्ठित रॉयल अल्बर्ट हॉल की पुरस्कार समिति द्वारा *भारत की गोल्डन वॉयस* के रूप में उद्धृत किया गया था।

दक्षिण में 'चिन्ना कुड़ल' (नन्ही कोयल) के तौर पर मशहूर के.एस. चित्रा को 26 जनवरी, 2021 को राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद द्वारा पद्म भूषण से अलंकृत किया गया है। सोलह साल पहले पद्मश्री से अलंकृत हो चुकी चित्रा के लिए इस बार का अलंकरण इसलिए खास है कि उनके गुरु एस.पी. बालासुब्रमण्यम को भी मरणोपरांत पद्म विभूषण से अलंकृत किया गया।

अब आइए ! चित्रा जी द्वारा गाये गये लोकप्रिय गीतों पर कुछ विचार-विमर्श कर लिया जाए। सबसे पहले मणि रत्नम की 'बांबे' में चित्रा जी के आइकॉनिक गीत 'कहना ही क्या' को पर्दे पर चला कर देखा जाए। 'गार्जियन' ने अपने एक अंक के आलेख '1001 Songs You Must Hear Before You Die' की सूची में खुले मन से स्वीकार किया है कि चित्रा जी का 'कहना ही क्या....' ये गाना मन-मानस को सूकून से भरे एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। गौर कीजिएगा कि इस गीत को पर्दे पर मधु और अरविंदम पर फिल्माया गया है। निर्देशक, कलाकार, संगीतकार, गायक आदि अधिकांशतः दक्षिण भारतीय फिल्मकार ही थे।

'ये हसीं वादिया ,ये खुला आसमां... आ गये हम कहाँ,मेरे साजना' - 1992 की मणि रत्नम की ही फिल्म 'रोजा' के इस गाने का जिक्र जरूरी है। आज भी यह गीत लोगों की दिलों में और होंठों पर जवान है। मंत्रमुग्ध करने वाला ये गाना अरविन्द स्वामी और मधु की फिल्म 'रोजा' का है। ए.आर.रहमान के संगीत और चित्रा जी की खूबसूरत आवाज में गाए इस गाने ने लोगों को दीवाना बना दिया था। रोमांस के रंगीन राग में रचे -बसे एस.पी.बाला सुब्रमह्यम और चित्रा की आवाज का सम्मोहन इस गीत का प्राण-तत्त्व है।

1991 में आई सलमान खान और रेवती की *लव* फिल्म का ये गाना 'साथिया ये तूने क्या किया..' आज भी सदाबहार गानों में शामिल है। दिवंगत गायक एस पी बालसुब्रमण्यम और चित्रा की आवाज ने इस गाने में जान भर दी थी। ये गाना आज भी सीरियल और फिल्मों में रोमांटिक सीन के दौरान इस्तेमाल भी किया जाता है।

'साथिया ये तूने क्या किया, बेलिया ये तूने क्या किया , मैंने किया तेरा इंतज़ार इतना करो ना मुझे प्यार, इतना करो ना मुझे प्यार, साथिया ये तूने क्या कहा बेलिया ये तूने क्या कहा' - गाने के सरल शब्दों को प्राणवंत कर दिया था। इस फिल्म की नायिका रेवती भी दक्षिण भारतीय अभिनेत्री है। उनकी आवाज का चुलबुलापन गीत को पर्दे पर जीवंत कर देता है।

2001 में आई 'अशोका' फिल्म के 'रात का नशा...' गाने ने लोगों को दीवाना बना दिया था। अनु मलिक और के. एस. चित्रा द्वारा गाए गए इस गाने को लोगों ने खूब पसंद किया था। गीत के अंतरों के बीच चित्रा ने सेंसुअस स्वर-योजना का चमत्कार करके फिल्म समीक्षकों को चकित कर दिया था। इसी प्रकार राम गोपाल वर्मा की फिल्म *रंगीला* के हिट होने में इसके गीत-संगीत का भी बड़ा योगदान था। इस फिल्म का एक चुलबुला गाना 'यारों सुन लो ज़रा.....' भी था, जिसे उदित नारायण के साथ के.एस. चित्रा ने आवाज दी थी। 'यारों सुन लो ज़रा, हाँ अपना भी कहना जीना हो तो अपुन के ही जैसा जीना...' चित्रा का चुलबुलापन इस गीत में पूरे चरम पर है।

और अब चित्रा के चमत्कारिक गीत पर एक नजर डाल लिया जाए जो उन्होंने 'विरासत' फिल्म के लिए गाया था। गीत की शुरुआत में होंठों को दबा कर सूरिली-लोक संस्कृति में रचे-बसे एक धुन को चित्रा जब अपनी मीठी आवाज में ढालती है तो एक सांगीतिक चमत्कार ही देखने को मिला है। फिर शब्दों की लय में ढल कर एक सार्वकालिक गीत उभरता है : 'पायलिया चुन-मुन, चुन-मुन' में चित्रा की आवाज का भोलापन सभी के मन-प्राण को तृप्त कर देता है। यहाँ भी तब्बू दक्षिण भारतीय कलाकार है, जो हिंदी के इस गीत के एक-एक शब्द को पूरी भाव-प्रवणता के साथ पर्दे पर सजीव कर देती है।

जी हाँ, अब उस्ताद सुल्तान खान के साथ के.एस.चित्रा की जुगलबंदी से सजे म्यूजिक एलबम 'पिया बसंती' की भी चर्चा करनी ही पड़गी, जिसने अपनी सांगीतिक सहजता और फिल्मांकन के कारण राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपार लोकप्रियता बटोरी है। साल 2000 में आए चित्रा जी और सुल्तान खान के इस सुमधुर म्यूजिक अल्बम ने तहलका मचा दिया था। संगीतकार संदीप शांडिल्य के धुनों कर इन दोनों की आवाज ने करिश्मा कर दिया है। विडियो एलबम का निर्देशन प्रदीप सरकार ने किया था। हर कोई रेडियो पर, टीवी में ये गाना सुनता-गुनगुनाता हुआ दिखाई देता था। सिर्फ इतना ही नहीं, आज भी कई लोग ये गाना सुनते नजर आते हैं। इलैया राजा, ए.आर.रहमान आदि दक्षिण भारतीय संगीतकारों के साथ हिंदी फिल्मों के संदीप चौटा, सलिल चौधरी, अनु मलिक, विशाल भारद्वाज, राजेश रौशन आदि जैसे संगीतकारों के साथ ताल-मेल बनाए रखने में चित्रा को सफलता मिली।

सच पूछा जाए तो के.एस.चित्रा एक ऐसी गायिका हैं, जिन्होंने सफलतापूर्वक उत्तर-दक्षिण विभाजन को तोड़ा है और अपनी राह आप बनाई है। वह इस मुहिम में अकेली नहीं है। कविता कृष्णमूर्ति, मिनमिनी, अलका याज्ञनिक आदि अनेक ऐसी सुर-साधिकाओं के साथ के.एस.चित्रा के गीतों के स्वर-तान पर कौन भारतीय नहीं थिरका होगा? अर्थात प्रांत, जाति, धर्म और भाषा की दूरी एवं दीवार जहाँ जाकर मिट जाती है, वहीं पर सच्चे भारत की सुनहरी तस्वीर उभरती है।

बहुत खूबसूरत पंक्ति : 'परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत विधान है।' दरअसल यह हर पल घटित हो रहा है। दिन होता है, फिर परिवर्तन होकर रात रात हो जाती है। सर्दी आई, फिर परिवर्तन होकर गर्मी आ जाती है। बच्चा पैदा हुआ, फिर परिवर्तन होकर बुजुर्ग हो जाता है। ये सब स्वाभाविक प्रकृतिक परिवर्तन हैं, परंतु हम बात कर रहे हैं - सकारात्मक आध्यात्मिक परिवर्तन की।

हमारा आध्यात्मिक परिचय : - आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि हम कौन हैं? हम वास्तव में इस शरीर की चलानेवाली, शरीर से भिन्न अजर, अमर, अविनाशी एक चेतन आत्मा हैं। अपने आप की आत्मा समझना ही - आध्यात्मिक परिवर्तन की पहली सीढ़ी है। आत्मा की तीन सूक्ष्म शक्तियाँ हैं - मन, बुद्धि और संस्कार। इन तीनों शक्तियों में वैचारिक, वाचिक और कार्मिक स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाना ही आध्यात्मिक परिवर्तन है। मन, बुद्धि और संस्कार में सकारात्मक सामंजस्य स्थापित करना ही सफल जीवन जीने की कला है।

परमात्मा का आध्यात्मिक परिचय :- बहुत सुंदर गीत की पंक्ति है - 'रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने, वही तो सृष्टि चला रहे हैं।' दरअसल, इस सृष्टि में जितने भी धर्म, संप्रदाय, जाति, मत, पंथ के लोग निवास करते हैं, लगभग सभी की मान्यता है कि परमात्मा एक है- अर्थात् हम सभी धर्म, जाति, संप्रदाय इत्यादि से भिन्न आत्मा हैं और हमें सभी आत्माओं के अलौकिक पिता ही परमपिता परमात्मा हैं। उस सर्वोच्च सत्ता पर अटूट आस्था रखते हुए, जीवन में मूल्यों को धारण करते हुए श्रेष्ठ कर्म करना ही आध्यात्मिक परिवर्तन है, साथ ही सफल जीवन जीने की कला है।

आत्मा परमात्मा में सामंजस्य अर्थात् ध्यान :- अंग्रेजी में एक कहावत है- "Meditation is more effective than medicine." दरअसल यदि हम अपने आप को आत्मा समझें और हमेशा उस सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा के ध्यान में कार्य-व्यवहार करते हुए मग्न रहे तो आध्यात्मिक परिवर्तन निश्चित है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं- यदि हमारा कोई लौकिक में अत्यंत ही प्रिय रिश्तेदार, मित्र, संबंधी इत्यादि है तो, उससे हम बिना शर्त के प्यार करते हैं। चाहे वे हमारे आस-पास हो या न हो। उनका ध्यान, स्मरण करने में हमें एक सेकेंड का भी समय नहीं लगता है और उनका चेहरा-मोहरा, साथ बिताए गये यादगार लम्हें आइने की तरह साफ दिखने लगता है। ठीक उसी प्रकार परमात्मा जो ज्ञान, गुणों का सागर है - हम सभी की आत्माओं के रचयिता हैं। उनके गुणों, कर्मों का बखान करना माने सूर्य को दिया दिखाना है। वास्तव में ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य की विचाराधाराओं को स्वस्थ किया जा सकता है। साथ ही ध्यान सफल जीवन जीने की अनूठी कला भी है।

मन का सकारात्मक परिवर्तन :- ठीक ही कहा गया है- "मन के हारे हार, मन के जीते जीत ।" अर्थात् हमारी आत्मा भी जो पहली और सबसे महत्वपूर्ण फैकल्टी मन है, उसके ऊपर सर्वप्रथम ध्यान देने की जरूरत है। किसी ने हवाई जहाज बनाया, किसी ने रेलगाड़ी बनायी तो किसी ने मोबाइल बनाया वगैरह. वगैरह। इसका विचार तो सर्वप्रथम मन में ही आया होगा न। अर्थात्, मन ही वह शक्ति है जिसमें यदि सकारात्मक सोच भरा जाए तो वह स्वामी विवेकानंद की तरह विश्व पटल पर भारत का झंडा बुलंद कर सकता है। और यदि नकारात्मक सोच भरा जाए तो वह विश्व पटल वह औसामा बिन लादेन की तरह विध्वंस को अंजाम दे सकता है। आध्यात्मिक परिवर्तन का पहला सोपान है - मन को सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण करना और यही सफल जीवन जीने की कला है।

बुद्धि का सकारात्मक परिवर्तन :- मन के साथ-साथ बुद्धि भी आत्मा की शक्ति है और बुद्धि का भी सकारात्मक परिवर्तन अनिवार्य है। दरअसल बुद्धि का काम ही है 'निर्णय करना'। कई बार हम ठीक निर्णय न कर पाने के कारण पुरानी मान्यताओं परंपराओं की आड़ में गलतियों को ढोते रहते हैं। किंतु समय के अनुसार हमें बदलना चाहिए। दूसरों को गलत

करते देख खुद गलती नहीं करनी चाहिए। अलबेले होकर कुसंग की रंग में रंगना नहीं चाहिए बल्कि हर पल अपनी अंतरात्मा की आवाज सुननी चाहिए।

सही क्या है, गलत क्या है- बुद्धि खुद ही निर्णय कर लेती है। जब हम बुद्धि से पुरानी गलतियों को स्वीकार करके कुछ नया रास्ता निकालते हैं तो हमारी उन्नति होती है और जो नुकसान हो रहा था, वह भी फायदे में तब्दील हो जाता है।

दरअसल बुद्धि का सकारात्मक परिवर्तन ही आध्यात्मिक परिवर्तन है। साथ ही सफल जीवन जीने की कला भी है। ठीक ही कहा गया है कि - 'हम हैं नये, अंदाज़ क्यूँ हो पुराना'।

संस्कारों का सकारात्मक परिवर्तन :- दरअसल प्रश्न उठता है - संस्कार क्या है? जो कर्म हम बार-बार करते हैं- वे हमारी आदत बन जाते हैं। पकी हुई आदतों को ही संस्कार कहते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'धागों से बनी रस्सी को तोड़ना मुश्किल है और आदत जो बन बन गयी है, उसे छोड़ना मुश्किल है।' लेकिन चाहे हमें कितनी भी लंबी यात्रा करनी हो, शुरुआत एक कदम से ही करनी होती है, चाहे हमें कितना भी धन कमाना हो, शुरुआत एक-एक रुपया जोड़कर ही करना पड़ता है। उसी प्रकार दुनिया चाहे कितनी भी बुरी हो, अगर सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहते हैं तो शुरुआत हमें खुद के संस्कार से ही करना होगा। एक-एक के सकारात्मक संस्कार-परिवर्तन से ही विश्व बदलेगा। ठीक ही कहा गया है कि 'हम सुधरेगे, युग सुधरेगा। हम बदलेंगे, युग बदलेगा।'

जिस प्रकार बार-बार रस्सी के घिसने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है, उसी प्रकार योग, ध्यान, आध्यात्मिक प्रक्रिया से जुड़ने के बाद, कठोर-से-कठोर संस्कार में भी सकारात्मक परिवर्तन संभव है और यही सफल जीवन जीने की कला है। अंत में, इन चंद पंक्तियों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा-

औरों की बदलना छोड़ो / खुद को हमें बदलना है।

आत्मा उन्नति के लिए / अध्यात्म पथ पर चलना है।

कार्मिक विभाग की गाथा (कविता)

- रवींद्र कुमार 'रवि'

कार्यालय अधीक्षक/गोपनीय/कार्मिक विभाग

जय रेलवे! जय कार्मिक विभाग!!
पिता का प्यार और मां की ममता के समान
-जहाँ पूरा होता है -
हर कार्मिक का हर अरमान।
अतर्मन में सदा रहे-सदाचार और सद्भाव।
कार्मिक विभाग का वीक्षण स्वभाव।
इसकी अपनी अलग पहचान-
करें कर्मचारियों की कार्य-क्षमता का सम्मान।
रेलों में जन्म से मरण तक के सफर में -
देता है साथ!
सर्व कल्याण हो- ऐसी भावना सहित
कार्य करे यह विभाग- दुर्भावना से रहित!
जहाँ प्रत्येक विभाग और कर्मचारियों में -
तक़रार और श्रेष्ठता की लगी रहती है होड़-
कार्मिक विभाग हमेशा यही चाहे-
कि उन सबों में गठजोड़ रहे।

माना कि प्रत्यक्ष भूमिका नहीं है इसकी-
रेल के परिचालन में!
पर परोक्ष ही सही-
कार्मिक विभाग- हर मुश्किल का हल-
निकालता है-अपने आँगन में!
हर चीज़ मिल जाती है-
कर्मचारियों को इस घराने में-
पर किसी को दर्द नहीं दिखता-
जो छुपा है हमारे एक कोने में!
कार्मिक विभाग के कर्मचारी भरते हैं-
दूसरों के घावों को-
काश! कोई समझ पाता-
हमारे भावों को!!



स्वच्छता अभियान (कविता) : अखिलेश कुमार/स्टेशन प्रबंधक/सिमुलतला

आओ एक संकल्प करें -

स्वच्छ रखें और स्वस्थ रहें।

बापू के पद चिह्नों पर चलकर

स्वच्छता का हम मिसाल गढ़ें

आओ एक संकल्प करें॥

गीत एक ऐसा गाया जाए,

जुनून एक ऐसी जगाया जाए,

हर नारी, हर नर में

अन्तःज्ञान पनपाया जाए।

आओ एक संकल्प करें॥

बापू ने थे जो सपने बोये,

सुन्दर स्वच्छ देश अपना होय

हर कोई अपना खुद काम करें,

निर्भरता का परित्याग करें,

आओ एक संकल्प करें॥

प्रकृति ने है सबक सिखाई,

स्वच्छता का है महत्व समझाई

है रोग मुक्त की केवल एक दवाई

स्वच्छता पर्यावरण और साफ-सफाई।

आओ एक संकल्प करें॥

ले सबक अब बड़े जन भी,

है स्वच्छता अभियान में झाड़ू उठाएँ।

तोड़ आसमानता की बेड़ी को,

है सबने मिलकर अभियान चलाएँ।

आओ एक संकल्प करें॥

स्वच्छता सिर्फ नारा ही नहीं,

जन-जन का लहू सम प्यारा हो,

सितम्बर-अक्टूबर माह तक ही नहीं

अब तो यह सलाना हो।

आओ एक संकल्प करें॥

आओ मिलकर करें यतन,

स्वच्छ बने भारत हो जैसे रतन,

पखवाड़ा और चौपाल से

जगमग हो विश्व भारत के भाल से।

आओ एक संकल्प करें॥

न हो कहीं शौच खुले में,

ना हो कहीं मौत कुड़े में

न कचड़ों की अंबार कहीं हो

जन-जन का सुविचार यही हो,

आओ एक संकल्प करें॥

कदम एक सहज बढ़ाना है,

स्वच्छता से सुन्दरता लाना है,

निर्मलता के दम पर भारत को

आरोग्यता सम्पन्न बनाना है।

आओ एक संकल्प करें॥

यत्र तत्र थूकदान न करें।

खुले में मल मूत्र परित्याग न करें,

कुड़े कचड़े कूड़े कुड़ेदान में डाल,

स्वच्छता का सम्मान करें।

आओ एक संकल्प करें॥

निश्चय ही होगा सफल अभियान,

जब दिखेगा घर घर रूझान,

चहुं ओर स्वच्छ भारत होने से,

विश्व में बढ़ेगा हम सब का मान।

आओ एक संकल्प करें॥

स्वच्छता से बड़ी कोई न सेवा

है न इससे बड़ी कोई कलेवा

इससे मिले शक्त के बल पर,

मिलती निरोगता रूपी अनुपम मेवा।

आओ एक संकल्प करें॥

ले लें हम शपथ आज सभी

फैलने न देंगे गंदगी कहीं,

मिलकर हाथ बटायेंगे

स्वच्छता रूपी आभूषण से भारत को

सुन्दर बानायेंगे।

आओ एक संकल्प करें॥



अध्यक्ष/नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-सह-प्रबंध निदेशक/ ईस्को/ बर्नपुर श्री वी.पी.सिंह के कर-कमलों से आसनसोल रेल मंडल के लिए 'चल बैजयंती द्वितीय पुरस्कार-2024' ग्रहण करते राजभाषा अधिकारी डॉ. मधुसूदन दत्त। साथ में श्री बिजय कुमार राजभर/कनिष्ठ अनुवादक।
(27 जून, 2024)

ऐ दुनिया, आज मेरी बिटिया रानी का स्कूल में पहला दिन है.....!

ललित निबंध

-बिजय कुमार राजभर/कनिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग

ऐ दुनिया, मेरी बच्ची का हाथ थाम लो, आज स्कूल में इसका पहला दिन है... कुछ देर को इसके लिए हर चीज नई और अजनबी होगी, इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इसके साथ नरमी से पेश आयेंगे.... आप तो जानते ही हो कि इसका संसार अब तक घर तक ही सीमित था. वह अपनी चहार दिवारी के बाहर कभी झाँकी नहीं थी.... यह अब तक घर की रानी रही है. अब तक इसकी चोट पर मरहम लगाने और इसकी ठेस लगी भावनाओं को प्यार का लेप लगाने के लिए मैं हमेशा मौजूद था....!

लेकिन अब बात दूसरी होगी. आज सुबह यह सीढ़ियों से उतरकर, अपना नन्हीं हथेलियों को उत्साह के साथ हिलायेगी और अपनी बड़ी और नई साहसिक यात्रा शुरू करेगी जिसमें शायद संघर्ष भी होगा, दुःख भी होगा और निराशा भी होगी..! इस संसार में जीने के लिए इसे विश्वास, प्यार और सहारे की जरूरत होगी, इसलिए ऐ दुनिया, मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इसके नन्हें हाथों को पकड़कर वो सब सिखायेंगे जो इसे जानना चाहिए.. सिखाओ जरूर लेकिन हो सके तो प्यार से....!

मैं जानता हूँ कि इसे एक दिन यह समझना पड़ेगा कि सभी लोग अच्छे नहीं होते – स्त्री-पुरुष सभी सच्चे नहीं होते... इसे यह भी सिखाएं कि संसार में हर धूर्त के लिए एक अच्छा इंसान भी है.. जहाँ एक दुश्मन है तो वहाँ एक दोस्त भी है... इसे शुरू में यह सीखने में मदद करें कि बुरे और धौंस जमाने वाले लोगों को ठिकाने लगाना सबसे आसान है....!

इसे किताबों की खूबियों के बारे में बताओ और पढ़ने के लिए प्रेरित करो... कुदरत के छिपे सौन्दर्य जैसे – आसमान में उड़ते पंछी, गुनगुन करते भौंरें, खुबसूरत पहाड़ों और हरीभरी वादियों में खिले फूलों को करीब से देखने और जानने के लिए इसे पूरा समय दें ... इसे यह भी सिखाओ कि बेईमानी की जीत से हार जाना कहीं ज्यादा अच्छा है... अगर वह खुद को सही पाती है तो इसे अपने विचारों पर तब भी विश्वास रखना सिखाओ, जब सब कह रहे हों कि वह गलत है....!

मेरे बच्ची को वह शक्ति दो, जिससे वह भीड़ का हिस्सा बनकर भेड़चाल न चले, जबकि सारा संसार चल रहा हो. इसे यह तो सिखाओ कि वह दूसरों की बातों को सुने, लेकिन हर बात को सच्चाई की तराजू पर परखे और उनमें से सिर्फ अच्छाई को ही अपनाएँ....!

अपनी अन्तरात्मा की आवाज को सोने-चांदी के सिक्कों से न तौले.. इसे यह सिखाओ कि वह लोगों के कहने में न आये और अगर वह अपनी सोच में खुद को सही पाती है तो वह अपने सही इरादों पर डटी रहे और संघर्ष करे... इसे नरमी से सिखाओ, लेकिन ऐ दुनिया, इसे बिगाड़ो मत और कमजोर मत बनाओ, क्योंकि लोहा आग में तपकर ही फौलाद बनता है.....



वैसे तो ऐसा कर पाना एक बहुत बड़ी बात है, मगर ऐ दुनिया, फिर भी तुम ऐसा करने की कोशिश जरूर करो... आखिरकार वह एक बहुत प्यारी बेटी है और तुम्हारी अथाह जमीन पर उसके नन्हें कदमों की यह पहली यात्रा है.....!!